राष्ट्रीय प्रतिबद्धता

दत्तोपन्त ठेंगडी

विश्वकर्मा श्रमिक शिक्षा संस्था, नागपुर

निवेदन

१९८७ के दिसम्बर २६, २७ व २८ को बेंगलूर में सम्पन्न भारतीय मजदूर संघ के आठवें अखिल भारतीय सम्मेलन में, भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक मान्यवर दत्तोपन्त ठेंगडी जी ने तीन भाषण दिए थे। उन्हीं का संकलन इस पुस्तिका के रूप में प्रस्तुत है।

भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्त्ताओं को जो आह्वान पहले भाषण में किया गया है वह किसी भी राष्ट्रवादी जनसंगठन के कार्यकर्त्ताओं के लिए भी औचित्य पूर्ण है। दूसरे सम्बोधन में जो विचार संजोया गया है, वह ट्रेड यूनियन आन्दोलन को भारतीय मजदूर संघ की एक अनमोल देन है। वह है राष्ट्रीय प्रतिवद्धता, जिसकी न आज केवल मजदूरों को अपितु सम्पूर्ण समाज को आवश्यकता है। तीसरा ओजस्वी भाषण कार्यकर्त्ताओं को विजय के आत्म विश्वास के साथ ध्येय पथ पर अग्रसर होने के लिए प्रेरणा देने वाला है।

आशा है यह पुस्तिका स्वरूप कुसुम अपने सौरभ को दशों दिशाओं में महकाने में समर्थ होगा।

नयी दिल्ली
दीपावली पर्व १९८८

प्रकाशक

आह्वान

आज प्रातःकाल सम्पन्न हुए कार्यक्रम में मैंने माननीय अतिथियों एवं आप प्रतिनिधियों का हृदय से स्वागत किया। आज के कार्यक्रम में, खास करके विशाल जुलूस के लिए, जो कर्नाटक प्रदेश के कार्यकर्ता यहाँ आये हैं, मैं उनका भी स्वागत करता हूँ। केवल कर्नाटक से ही नहीं, अपितु केरल, तमिलनाडु एवं आंध्रप्रदेश के समीपवर्ती जिले से जुलूस में जिन-जिन कार्यकर्ताओं ने भाग लिया है, मैं उनका स्वागत करता हूँ। साथ ही कर्नाटक प्रदेश की अपने से सम्बद्ध यूनियनों को इस बात के लिए विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने कार्यकर्ताओं के माध्यम से इस अधिवेशन का सारा खर्च स्वयं वहन किया, ऐसा करके उन्होंने एक स्वस्थ परम्परा कायम की है। इस प्रकार की यह पहली घटना है। अपने प्रवास के दौरान जब मैंने इसकी जानकारी अपने वामपंथी मित्रों को दी तो वे मुझसे बोले, 'आप क्या बात कर रहे हैं ? यह तो एक मात्र अवसर है जब आप पूंजीपतियों से अधिक से अधिक चन्दा इकट्ठा कर सकते हैं। इस काम के लिए तो आप प्रबन्धकों से भी पैसा ले सकते हैं। मैंने उनसे कहा कि यही मेरे और आप जैसे प्रगतिशील लोगों में अन्तर है। आप सदैव व्यावसायिक मस्तिष्क वाले हैं, जबकि भारतीय मजदूर संघ पूर्णतया पागल लोगों का संगठन है। यहां केवल मूर्खता ही है। आप हमें दस में से किसी एक संगठन का नाम बतायें जो जनता को अपनी ओर बिना किसी प्रलोभन या लालच के आकर्षित करता हो। अगर कोई संगठन में प्रवेश करता है तो संगठन उसे पहले से ही धन या पद या अन्य किसी बात के लिए आश्वस्त करता है। यह तो केवल भारतीय मजदूर संघ है, जो कहता है, कि 'भारतीय मजदूर संघ की क्या

पहचान-त्याग, तपस्या और बलिदान' रक्त, स्वेद एवं अश्रु। इसकी पहचान है। यह तो एकमात्र भारतीय मजदूर संघ है जो ऐसा कहने का साहस करता है। स्वर्गीय बड़े भाई रामनरेश सिंह, जो भारतीय मजदूर संघ के जनरल सेक्रेटरी थे, को यहाँ याद किया जाये तो उनका जीवन भारतीय मजदूर संघ के लिए पूर्णतया समर्पित था। आपको अक्टूबर, १९८४ के अभ्यास वर्ग का याद होगा, जिसमें एक सत्र विशेष रूप से ऐसे लोगों के लिए रखा गया था, जो भारतीय मजदूर संघ का कार्य करते हुए दिवंगत हुए या मारे गये। इस सत्र में उनके नाम, यूनियन का नाम व पद की जानकारी ली गई थी। इस सत्र में एक घंटा बीस मिनट का समय लगा था। इससे आप अनुमान लगा सकते हैं कि भारतीय मजदूर संघ के काम के लिए कितने लोगों ने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया। क्या इस पागलपन के पीछे कोई तत्वज्ञान है ? हम देश भक्त हैं। मानवतावादी हैं। हम एकात्म मानव दर्शन में विश्वास करते हैं तथा सम्पूर्ण मानव जाति की उन्नति चाहते हैं। पश्चिम में विज्ञान और तकनीकी में चाहे जितनी प्रगति हुई हो, किन्तु वे केवल भौतिकवाद में विश्वास करते हैं। ऐसा करते हुए वे सम्पूर्ण मानव जाति के बारे में सोच भी नहीं सकते हैं। यह तो भारत के ही भाग्य में है कि वह पूरे विश्व को दिशा-निर्देश करता है। कारण कि शेष मानवता का मार्ग प्रशस्त करने व विनाश से बचाने के लिए भारत में ही एक सही भरपूर आनन्दित आध्यात्मवाद व भौतिकवाद पा सकते हैं। भारत अकेला ही विश्व शांति, संस्कृति एवं एकता का आधार बन सकता है। कारण कि जैसा आज मैंने प्रातः कहा था कि भारत के पास ही देने को सांस्कृतिक संदेश है। हम "विविधता में एकता' पर विश्वास करते हैं। विश्व शांति और विश्व एकता एक सरकार से दूसरे सरकार के साथ समझौते से नहीं प्राप्त हो सकती। यह तो मानव से मानव के सम्बन्धों पर निर्भर

होती है। किसी देश के श्रेष्ठ विचारकों के विचार का प्रसार उनके कार्यकर्ताओं द्वारा होता है। इसलिए हम भारतीय मजदूर संघ के प्रारम्भ से ही यह कहने की धृष्टता कर रहे हैं। हमारा नारा भी है कि 'मजदूरो, दुनिया को एक करो', जबकि बामपंथियों का नारा था, 'दुनिया के मजदूरो, एक हो''। विश्व एकता और शांति का आधार भारत बने, इसलिए आवश्यक है कि भारत धनी, मजबूत और सब प्रकार से वैभवपूर्ण हो। इसलिए हमने कहा कि हमारा तात्कालिक लक्ष्य 'परं वैभवन्नेतु मेतत स्वराष्ट्रम्' है। आओ, हम इस देश को वैभव के उच्चतम शिखर पर ले चलें। किन्तु, इसका यह अर्थ नहीं है कि सम्पन्नता माने मुठ्ठी भर लोग याने टाटा, विरला और कुछ सौ मिनिस्टर, बल्कि सम्पन्नता नीचे से निचले श्रेणी के लोगों की, जिसको रस्किन ने कहा है, 'अन्त तक'। निचले तबके की उन्नति ही पूरे देश की उन्नति है, ऐसा हम विश्वास करते हैं। इसलिए भारतीय मजदूर संघ ने कहा कि जनता और सरकार, दोनों को अब तक अपनाई गलतियों को छोड़ देनी चाहिए और सही नीतियों को अपनाना चाहिए। काम करने का अधिकार मौलिक अधिकार होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति की नौकरी की सुरक्षा हो तथा आकस्मिक, ठेकेदार और वर्कचार्ज लेबर तथा दैनिक वेतनभोगी मजदूरों में वर्तमान सेवा की असुरक्षा का डर समाप्त होना चाहिए। आवश्यकता पर आधारित न्यूनतम वेतन सभी को मिलना चाहिए। समस्त कर्मचारी बोनस का हकदार हो।

कारखानों में दो प्रकार की साझेदारी हो—पहला वह जो श्रम करता है, दूसरा वह जो पूँजी लगाता है। मजदूरों का पसीना ही उद्योगों में लगी उसकी पूँजी मानी जाय। ऐसा होने से मजदूर उस कारखाने का मालिक बन सकता है। एक सर्वंकष आर्थिक नीति बनाने के लिए सभी आर्थिक हितपक्षों की एक गोलमेज सम्मेलन

आयोजित किया जाय, जिसमें लागत, रोजगार, उत्पादकता, मूल्य, आय और वेतन पर चर्चा हो ताकि एक सर्वंकष आय नीति निश्चित की जा सके। गोलमेज सम्मेलन केवल राजनीतिक नेताओं का नहीं, बल्कि सभी आर्थिक हितपक्षों का हो, जिसमें इन पांचों विषयों पर चर्चा हो। आज भारत के ऊपर विदेशी पूँजी का हमला हो रहा है। भारत में पूँजीपतियों के गढ़ निर्माण किए जा रहे हैं। हमें ऐसे देशी व विदेशी पूँजी एकाधिकार का विरोध करना है। भारत सरकार भारत के गरीब लोगों के विरुद्ध एक षड्यंत्र चला रही है। हमें ऐसे षडयंत्र से शीघ्रातिशीघ्र सचेत हो जाना है। विदेशी पूँजी-पतियों के लाभ के लिए भारत सरकार भारत के लोगों पर विदेशी तकनीक का बोझ बढ़ा रही है। क्योंकि उस तकनीक का हमारे देश के लिए पूरा उपयोग नहीं है। इसलिए भारतीय मजदूर संघ ने एक राष्ट्रीय तकनीक नीति को विकसित करने की माँग की है। इस नीति के अन्दर पाश्चात्य तकनीक के अच्छे बिन्दु जिसे हम ज्यों का त्यों अपना सकते हैं, स्वीकार करें। पाश्चात्य देश की ऐसी तकनीक जो हमारी परम्परा रीति-नीति वर्तमान की आवश्यकताओं और भविष्य की आकाक्षाओं को पूरी करने वाली न हों, उसे पूरी तरह त्याग देना होगा। वह तकनीक जिसमें कुछ सुधार करने की आवश्यकता हो, सुधार करके अपनाई जाय। ऐसे क्षेत्र जहां विदेशी तकनीक नहीं अपनाई जा सकती है, वहाँ हमें अपनी निजी भारतीय तकनीक विकसित करना चाहिए। इन सबके लिए राष्ट्रीय तकनीक नीति अपनाया जाना अवश्यक है। यह कहना तो आसान है किन्तु क्रिया-न्वयन कठिन है। कारण कि विदेशी पूँजीपतियों का इसके विरुद्ध षडयंत्र चल रहा है। भारतीय एकाधिकार पूँजीपति और भारत सरकार ऐसी नीतियों के विरोध में है। यदि आप किसी के मुँह को जबरन खोलना चाहते हैं तो नाक दबाना आवश्यक है और तब तक नाक दबाये रखना आवश्यक है, जब तक की मुँह न खुल जाय।

इस षडयंत्र से छुटकारा पाने के लिए अधिक से अधिक शक्ति की आवश्यकता है। अगर कोई कर्मचारी केवल अपने वेतन, सेवाशर्तों और बोनस के बारे में ही सोचता है तो ऐसी शक्ति जुटाना बड़ा कठिन होगा। अस्थाई तौर पर आपको कुछ लाभ अवश्य हो जायेगा, किन्तु गरीब लोग समाप्त हो जायेंगे। इसलिए हमारे पागलपन के पीछे जो सिद्धान्त हैं वह हैं त्याग, तपस्या और बलिदान अर्थात जो अच्छे हैं वह कष्ट सहेंगे, शेष सब उन्नति करेंगे। वर्तमान समय में भारत में हम कुछ ही लोगों को खुशहाल देखते हैं, शेष को विपन्न अवस्थाओं में। जिसके कारण देश दिन-प्रति दिन गिरावट की ओर जा रहा है और डूब रहा है। इसलिए भारतीय मजदूर संघ का कहना है कि जब सूर्य तपने लगे, उस समय छप्पर डालना उचित नहीं है। यह आदत तो देश को पीछे ले जायेगी। आज कार्यकर्ता बन्धु जो इस सभा में बैठे हैं साधारण कार्यकर्ता नहीं हैं बल्कि राष्ट्र-निर्माता हैं। इसलिए इस कठिन काम का बोझ आपको अपने कन्धों पर ही उठाना होगा। आप कार्यकर्ताओं को यह निर्णय त्याग, तपस्या और बलिदान के आधार पर लेना होगा, जिसके लिए भारतीय मजदूर संघ प्रसिद्ध है। भूतकाल में हमने कई अधिवेशन किए हैं किन्तु यह आठवां अखिल भारतीय अधिवेशन एक विशेष अवसर पर हो रहा है। जो आपमें से अधिक लोगों को पता नहीं है। भूतकाल में हमारा देश अनेक कठिन परिस्थितियों और संघर्ष में से गुजरा है। ऐसी प्रत्येक स्थिति में लोगों ने त्याग, तपस्या और बलिदान के आधार पर ही देश को बचाया है। एक ऐसे राष्ट्र-निर्माता एवं त्याग, तपस्या की प्रतिमूर्ति का जन्म इस मंगलकारी दिन हुआ था। वे थे, परमपूज्य श्री गुरु गोविन्द सिंह जी, जिन सिद्धान्तों के लिए वे जिए और मरे, उन्हीं सिद्धान्तों पर चलकर भारतीय मजदूर संघ कार्य कर रहा है। आज जब हम कर्नाटक के बंगलौर में मिल रहे हैं। आपको

एक ऐतिहासिक घटना का स्मरण दिलाना चाहता हूँ, जिसे विस्तृत विवरण के साथ रखा जाना उचित होगा। अपने सम्मुख समस्याओं की गंभीरता का अनुभव करते हुए श्री गुरु गोविन्द सिंह जी ने कहा कि उन्हें पाँच प्यारों की आवश्यकता है। अर्थात् ऐसे पाँच लोग चाहिए जो अपने को एक विशेष उद्देश्य के लिए बलिदान करने को तैयार हों उनकी इस अपील पर जो पहला व्यक्ति तैयार हुआ, वह कर्नाटक के बिदर का था। वह कोई सैनिक नहीं था। वह श्रम करके अपनी जीविका चलाता था। वह कोई बहुत बड़ा विद्वान नहीं था बल्कि वह साधारण नाई था। एक साधारण कर्मचारी श्री गुरू गोविन्द सिंह के आह्वान पर बलिदान होने के लिए तैयार था। इस घटना से हमें क्या शिक्षा मिलती है? राजनीतिक नेता प्रायः राष्ट्रीय एकता का नारा बुलन्द करते हैं। सत्य यह है कि जब तक नेता लोग सामने नहीं थे तब तक देश में राष्ट्रीय एकात्मता का अभाव नहीं था। नेता देश में गरीब लोगों की चिन्ता नहीं करते हैं। उन्हें देश के भविष्य की चिन्ता नहीं रहती है। वे तो पर्दे पर केवल इस भावना को लेकर प्रकट होते हैं कि उन्हें प्रधानमंत्री का पद किस तरह मिल जाय। राष्ट्रीय एकता न होने देने के लिए वे आज प्रमुख कारण बन गए हैं।

वर्तमान समय में भारत में पंजाब और कर्नाटक रेल और वायुयान के कारण नजदीक हैं, किन्तु श्री गुरु गोविन्द सिंह जी के समय में परिवहन के अभाव में पंजाब कर्नाटक से कितनी दूर था? और तब एक नेता ने पंजाब से आह्वान किया तो पहला प्यारा जिसने उनके इस आह्वान को स्वीकार किया, वह कर्नाटक से था। इस घटना से इस बात का अनुमान लगाया जा सकता है कि उस समय कितनी प्रबल राष्ट्रीय एकता थी। इस घटना से एक दूसरी भी शिक्षा मिलती है, वह यह कि किस प्रकार से एक साधारण कर्मचारी

देश के लिए त्याग के प्रश्न पर अपने को तैयार करता है। श्री गुरु गोविन्द सिंह ने अपने प्रथम प्यारे को भाई साहब कहा, और आज भी उसे उसी नाम से याद किया जाता है। भाई साहब की ही भाँति, हम श्रम से अपनी जीविका उपार्जित करते हैं। क्योंकि कर्मचारी हैं। हम भी उसी तरह देशभक्त हैं। हमारे लिए राष्ट्रीय एकता का नारा केवल नारा मात्र ही नहीं, अपितु हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। जब राजनीतिक नेताओं ने इस देश का विभाजन किया तो कर्मचारियों को अभाव में छोड़ दिया और आज भी सर्वत्र बेरोजगारी है। जब भारतीय पूँजीपति विदेशी पूँजीपति से हाथ मिला रहे हों, यह आवश्यक हो गया है कि आज के दिन को हम संकल्प दिवस के रूप में मानें। हममें से प्रत्येक अपने मन में संकल्प करें। इसे प्रचारित करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हम प्रचार के लिए दीवाने नहीं हैं। संकल्प क्या है ? मैं अपना जीवन भारत के गरीबों के उत्थान के लिए अर्पित करूँगा। मैं अपना जीवन भारत की प्रतिष्ठा के लिए दूँगा। गरीबों की समृद्धता और भारत की प्रतिष्ठा से ही मानव जाति की प्रतिष्ठा हो सकेगी, इसलिए मजदूरों की सम्पन्नता और उसके द्वारा राष्ट्र की प्रतिष्ठा इसके परिणामस्वरूप मानव जाति का कल्याण, वे सब एक ही हैं। इन तीनों बातों के लिए हम अपने को केवल अर्पित ही नहीं करेंगे बल्कि सब प्रकार से अपने जीवन का बलिदान करेंगे। यही वह प्रतिज्ञा है जिसे हमें आज के इस पवित्र दिन लेना है। यही मेरा आपसे आह्वान है।

———

प्रतिबद्धता

प्रत्येक भाषण प्रारम्भ करने से पूर्व यह आवश्यक है कि नियमानुसार अध्यक्ष, पदाधिकारी एवं श्रोतागण को सम्बोधित किया जाय। इसलिए कल मैंने अपना भाषण प्रतिनिधि बंधुओं एवं आमंत्रित सज्जनों से प्रारंभ किया था। किन्तु आज और कल के सत्र में अन्तर है। हैदराबाद अधिवेशन में मैंने एक नाटक का उदाहरण दिया था जिसमें पात्र जब मंच पर होते हैं तो उसमें कोई राजा और दूसरा नौकर होता है, किन्तु वे सब एक ही मण्डली के होते हैं। जिस पात्र का जो काम निश्चित रहता है वह उसी अनुसार कार्य करता है। कोई राजा के वेश धारण करता है तो कोई नौकर का रूप बनाता है क्योंकि मंच पर उन्हें वही भूमिका निभानी हैं। कार्य समाप्त होने पर जब वे ग्रीन रूम में वापस आते हैं, मंच पर वे क्या थे, उसे वे भूल जाते हैं। कल के सत्र में हम मंच पर थे और आज ग्रीन रूम में हैं। मैंने प्रतिनिधियों को भाइयों कहकर सम्बोधित किया था जो विधान के अनुसार सही है। किन्तु मुझे एक घटना का स्मरण होता हैं। थल सेनाध्यक्ष अरुण वैद्य की हत्या के बाद पूना में एक शोक सभा आयोजित की गई। वक्ताओं में से एक ने कहा कि सेना में एक प्रथा है कि जब हम सेना के किसी अधिकारी की श्रेष्ठता के बारे में बोलते हैं तो प्रथम उन पदों का उल्लेख करते हैं, जिस पर वह रह चुका होता है और इसके बाद चाहे वह जनरल हो या फील्ड मार्शल, उसकी अधिक से अधिक प्रशंसा में कहा जाता है कि 'वह सही अर्थों में एक सैनिक थे।' इसके बाद वक्ता कहते हैं कि मैं अरूण वैद्य के सम्मान में केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि वे सच्चे अर्थों में सैनिक थे। यही परम्परा भारतीय मजदूर संघ की भी है।

किसी कार्यकर्ता के लिए हम उसे सच्चा कार्यकर्ता का ही उल्लेख करते हैं। कोई अध्यक्ष हो या कोई महामंत्री, यह तो कार्य की दृष्टि से एक व्यवस्था है। यह सभी लोग जानते हैं कि भारतीय मजदूर संघ कार्यकर्ताओं का परिवार है न कि विधान के अनुसार चलने वाला एक मात्र संगठन। निस्सदेह हमारा एक विधान है। परिवार में भी कुछ नियमों का पालन किया जाता है किन्तु भारतीय मजदूर संघ की आत्मा संविधान नहीं बल्कि पारिवारिक वातावरण है। हम सभी कार्यकर्ता हैं, इसलिए मैं अनुभव करता हूँ कि इस सभा में उपस्थित सभी लोगों को कार्यकर्ता बन्धुओं के नाम से ही सम्बोधित करूँ जो उचित भी है।

प्रारम्भ में ही मैं यह कहना उचित समझता हूँ कि मेरा यह भाषण नियमानुसार भाषण नहीं है। क्योंकि हमारा संगठन पारिवारिक है। इसलिए इस समय की चर्चा को परिवार के अन्दर विचारों के आदान-प्रदान के रूप में माना जाय। प्रत्येक अधिवेशन का अपना एक उद्‌देश्य होता है। पहला अपने बारे में दूसरों को बताना, दूसरा आपस में विचार-विमर्श कर इस बारे में लेखा–जोखा तैयार करना कि हम कितना आगे बढ़े हैं और कितना आगे हमें और बढ़ना है। तीसरा कर्मचारियों और देश के सामने कौन-सी समस्याएँ हैं उस पर विचार करते हुए प्रस्ताव पारित करना, जिसके द्वारा देश और मजदूर को दिशा मिल सके। चौथा यह सोचना कि हमारा संगठन कैसे मजबूत हो। कल के उद्‌घाटन सत्र व विशाल जलूस और खुले अधिवेशन से यह पता चला कि हम क्या हैं? और हमारा लक्ष्य क्या है ? अगले सत्रमें हम समस्याओं के बारे में विचार करेंगे। संगठनात्मक पहलुओं पर विचार करने के लिए अलग से समय निश्चित किया गया है। हम कुछ आत्म निरीक्षण करेंगे। इसलिए आप दूसरे सत्र को नियमानुसार सत्र का अंग मानकर विचार न करें।

जब मैं आपको एक ही परिवार के सदस्य के रूप में देखता हूँ तो मैंएक बात पर ध्यान देता हूँ, जिस पर आपका ध्यान भी गया होगा। जब हम विभिन्न अवसरों पर, चाहे वह अधिवेशन रहा हो या अभ्यास वर्ग हो, जो कार्यकर्ता इन कार्यक्रमों में एकत्र आये उनमें कुछ को मैंने पुराने कार्यकर्ता के रूप में देखा, जो वर्षों से भारतीय मजदूर संघ के काम में लगे हैं। यह सत्य है कि जब उन्होंने भारतीय मजदूर संघ का कार्य प्रारम्भ किया तो उनके बाल काले थे। आज या तो उनके बाल सफेद हो गए हैं या तो झरकर खोपड़ी गंजी हो गई है। ऐसे पुराने कर्यकर्ताओं को मैं यहाँ भी एकत्र देख रहा हूँ। हमने इस समय यह निश्चित किया था कि हमारा अधिवेशन कुछ काम के लिए होगा न कि प्रदर्शन के लिए। हैदराबाद में अधिवेशन प्रदर्शनात्मक था। लेकिन यह काम का अधिवेशन होने के नाते जो प्रतिनिधि यहाँ आये हैं उनके लिए कुछ मापदण्ड तय किये गए थे। जैसे, अब काम बढ रहा है, नई यूनियनें बनाई जा रही हैं तथा एकत्रित आये कार्यकर्ताओं में से देखना है कि कितने नौजवान यूनियन के काम में आ रहे हैं। मैं कुछ लोगों को देख रहा हूँ जो इस मीटिंग में पहली बार आये हैं, यह एक अच्छी बात है। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय मजदूर संघ में प्रेरणा देने की क्षमता है। जो एक बार कार्यकर्ता बना वह सदैव के लिए कार्यकर्ता है इतना ही नहीं तो भारतीय मजदूर संघ ने नये कार्यकर्ताओं को भी आकर्षित किया है। शेक्सपियर ने अपने नाटक 'एन्टोनी एण्ड क्लीयोपाट्रा' में एक स्थान पर उल्लेख किया है कि क्लीयोपाट्रा की नौकरानी क्लियोपाट्रा से पूछती है कि यह अन्टोनी कौन है ? जिससे वह इतनी अधिक आकर्षित हुई हैं। उसकी उम्र क्या है ? क्लियोपाट्रा एक पहेली के रूप में उत्तर देती है। वह कहती है कि एन्टोनी उस आयु वर्ग में है जिसमें उसके काले बाल उसकी बहादुरी बतलाते हैं और सफेद बाल उसकी परिप-

क्वता प्रकट करते हैं। यही स्थिति भारतीय मजदूर संघ के साथ है। जहाँ नौजवान भारतीय मजदूर संघ की लड़ाकू वृत्ति के द्योतक हैं वहीं पुराने कार्यकर्ता परिपक्वता के प्रतीक हैं। इसलिए हमारा संगठन उसी प्रकार बढ़ रहा है जैसी हमें अपेक्षा थी। यहां एकत्रित लोगों को देखने से यह धारणा और मजबूत होती है। नवजवान कार्यकर्ताओं की दृष्टि से हम प्रायः एक चेतावनी देते आए हैं। मैं विस्तार में नहीं जाऊगा, संक्षेप में ही कहूँगा। हो सकता है आप में से कुछ लोग भारतीय मजदूर संघ से भिन्न विचार रखने वाले संगठन से आए हों, उदाहरण के लिए आई० एन० टी० यू० सी०, ए० आई० टी० यू० सी० या अन्य किसी संगठन से हो सकते हैं। वे हमारी भातृ संस्थाएँ हैं। हमें उनके प्रति प्यार है किन्तु हमारा प्यार अंधा नहीं है इसलिए हम उनमें क्या कमी है, यह जानते हैं। आज दूसरे संगठनों में जो वातावरण चल रहा है हम उससे भी सचेत हैं। हम उनकी त्रुटियों को जानते हैं। सर्वत्र राजनीतिक वातावरण है जिसका दोषपूर्ण प्रभाव सर्वत्र फैल रहा है। इसलिए निःस्वार्थी कार्यकर्ताओं के निर्माण के अनुकूल वातावरण नहीं है। वे यह अनुभव नहीं करते हैं कि संगठन बढ़ना चाहिए, देश की उन्नति हो, और मजदूर खुशहाल हों। सभी केवल अपने आपको समृद्धशाली बनाना चाहते हैं। हमारे नवयुवक कार्यकर्ताओं ने ऐसा दूषित वातावरण किसी अन्य स्थान पर देखा होगा। जहाँ विधान के प्रत्येक वाक्यखण्ड का उपयोग संगठन को तोड़ने के लिए किया जाता है। जहाँ प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य प्रधानमंत्री बनना है। जहाँ एक दूसरे की टांग खींचने का अभ्यास है। अन्यत्र भी आपको ऐसे प्रगतिशील वातावरण का अनुभव हुआ होगा। मेरा आपसे आग्रह है कि कृपया ऐसे प्रगतिशील वातावरण के जीवाणु भारतीय मजदूर संघ में न लावें। मेरा आपरेशन हुआ था। जब मैं पुनः स्वस्थ हो रहा था तो मुझे जो देखने आते थे,

उनसे जूते और अन्य सामान कक्ष से बाहर रखने को कहा जाता था। मैंने डाक्टर से पूछा ऐसा प्रतिबन्ध क्यों है ? डाक्टर ने बताया कि यह जीवाणु को बाहर रखने के लिए है। इससे उस व्यक्ति को, जिसका आपरेशन हुआ है, कोई नई कठिनाई उत्पन्न नहीं होगी। इसलिए आप ऐसे जीवाणु को बाहर रखें ताकि भारतीय मजदूर संघ को कष्ट न हो, मेरे एक दोस्त मुझे एक संगठन की बैठक में ले गए थे, जिनका नाम लेना मैं उचित नहीं समझता। वहाँ हमें ऐसे प्रगतिशील वातावरण को देखने का अवसर प्राप्त हुआ। बैठक समाप्त होने के बाद मेरे मित्र अपने घर मुझे भोजन पर ले गए। मैंने अपने मित्र से कहा कि बैठक में जिस प्रकार से एक दूसरे को गालियाँ दी गई उससे ऐसा लगा कि वे लोग अधिक प्रगतिशील हैं। उन्होंने मुझे बीच में टोकते हुए रीडर्स डाइजेस्ट मेंप्र काशित एक छोटी-सी कहानी सुनाई। कहानी एक ऐसे व्यक्ति के सम्बन्ध में थी जो समुद्र से मेंढक पकड़कर उसे बेचने का काम करता था। जब उसके एक मित्र ने उससे बात करने की इच्छा प्रकट की तो उसने उस मित्र को समुद्र के किनारे एक स्थान पर मिलने को कहा। जब उसका मित्र समुद्र के किनारे पहुँचा तो उसने देखा कि उसका मित्र मेंढ़कों को पकड़कर एक खुली बाल्टी में रख रहा था। बाल्टी पर कोई ढक्कन नहीं था। बाल्टी को खुला छोड़कर वह समुद्र में मेंढ़क पकड़ने जाता था और मेंढ़कों को उसी खुली बाल्टी में लाकर रख देता था। उसने पूछा, क्या खुली बाल्टी से मेंढ़क निकल नहीं जायेंगें ? उसने उत्तर दिया, 'नहीं'। मेंढकों की एक आदत है जिसके कारण यदि एक मेंढक निकलने की कोशिश करता है तो दूसरा उसकी टांग पकड़कर नीचे घसीट लेता है। इसलिए वह मेंढ़कों के बाल्टी से भाग निकलने के बारे में बिल्कुल चिंतित नहीं है। इस प्रकार एक दूसरे की टांग पकड़कर खींचने की प्रगतिशील मनोवृत्ति भारत में तेजी से बढ़ रही है। इसलिए आपको

ऐसे दूषित जीवाणुओं को बाहर रखने के लिए मैंने चेतावनी दी है। आप ऐसे जीवाणुओं से उत्पन्न विकार दैनन्दिन जीवन में, परिवार में तथा अधिवेशनों में देख सकते हैं। कुछ समय पहले एक अति प्रगतिशील छात्र संगठन का सम्मेलन नागपुर में हुआ था। प्रतिनिधि विशेष ट्रेन से आए थे। आते समय मार्ग में उन्होंने रेलवे प्लेटफार्म पर लगे स्टाल्स को लूटा। नागपुर पहुँचने के बाद भी वे अपनी खतरनाक गतिविधियों को जारी रखे। सम्मेलन स्थल के बाहर उन्होंने नागपुर की महिलाओं के साथ छेड़छाड़ की। परिणाम स्वरूप स्थानीय लोगों द्वारा उनकी पिटाई हुई। यह सब बातें समाचारपत्रों में प्रकाशित हुई। मैंने उस सम्मेलन का प्रबन्ध देख रहे कांग्रेसियों से पूछा कि इस प्रकार की घटना क्यों घटी ? प्रतिनिधि के रूप में आए छात्रों ने प्रबन्धकों पर हमला क्यों किया ? और सम्पत्ति की तोड़फोड़ क्यों की ? क्या इसके पीछे कोई कारण है ? क्या इसका विश्लेषण किया जा सकता है ? उन्होंने कहा, कारण है। सम्मेलन में आए हुए प्रत्येक प्रतिनिधि अपने को बारात में आए हुए दूल्हा का बाप समझते थे और जो प्रबन्धक हैं उन्हें वे लड़की का बाप समझते थे। इसलिए उनका व्यवहार शादी में आये दूल्हे के बाप का लड़की के बाप के साथ परम्परागत चले आए व्यवहार के समान था। मैंने उनसे कहा, निस्सन्देह यह सबक तो सीखने लायक है। हमारे पास ऐसी कोई समस्या नहीं है। हमारे संगठन में जो कोई भी सम्मेलन में भाग लेता है वह कार्यकर्ता है। इसलिए कोई प्रबन्ध के कार्य में लगा हो या कोई प्रतिनिधि हो, सभी लड़की पक्ष के हैं। उनमें दूल्हे के पक्ष का कोई नहीं होता। इसलिए उस प्रकार का प्रगतिशील वातावरण अर्थात् गुण्डागर्दी की हमारे संगठन में आशा नहीं की जा सकती है। प्रत्येक कार्य में कार्यकर्ताओं का स्तर स्पष्ट रूप से झलकता है या दिखाई देता है। अपने सम्मेलनों में भी असुविधाएँ होती ही हैं। ऐसे सभी अवसर

पर हमारे मस्तिष्क की स्थिति का पता चलता है। नेपोलियन के जीवन का एक उदाहरण है। हन्नीबाल के बाद दो हजार वर्ष पश्चात नेपोलियन ने एल्पस पर्वत सेना और गोला–बारूद के साथ पार किया। निस्संदेह यह उसकी बहुत बड़ी सफलता थी। नेपोलियन को पर्वत के पास अपना कैम्प लगाना था। पेरिस से वह भोजन सामग्री, वर्दी तथा अन्य कपड़े लड़ाई के लिए गोला-बारुद आदि प्राप्त करता था। पेरिस का शासन उस समय राजनीतिक नेताओं द्वारा चल रहा था जिनको फ्रांस की विजय (Glory) से कोई सम्बन्ध नहीं था। नेपोलियन ने अपने विजय अभियान से काफी ख्याति अर्जित कर ली थी। इसलिए राजनीतिक नेताओं को नेपोलियन की और विजय से ईर्ष्या थी। उनको भय था कि नेपोलियन की और अधिक विजय उनकी स्थिति को संकटमय बना देगी। इसलिए सेना को सामान भेजने में देरी की गई। एल्प्स की भीषण ठंडक में फटे कपड़े और जूते के कारण सेना को काफी कष्ट था। सैनिकों ने अपनी कष्टदायक स्थिति पर आपस में चर्चा करनी शुरू की। वे फ्रांस क्रांति के तीन सिद्धान्तों के लिए अपना प्राण न्योछावर करने को तैयार थे। वे लड़ाई में लड़ते हुए मरने को तैयार थे, किन्तु कठिन मौसम में भूख और फटे कपड़े पहनकर मरने में कौन-सा पराक्रम या शूरता है, ऐसा वे आपस में चर्चा कर रहे थे। असंतोष भड़का और इस असंतोष की सूचना नेपोलियन के कानों तक पहुँची। नेपोलियन ने भलीभाँति विचार कर एक योजना बनाई सैनिकों को अर्ध मण्डल में एकत्रित किया और सभी से कहा कि वे अपने विचार स्वतंत्र रूप से प्रकट करें। एक सैनिक आगे बढ़ा और फटी कमीज के कारण उसका सीना खुला हुआ था। पिछले युद्ध में उसके सीने में लगे तलवार के घाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। उन दिनों किसी भी सिपाही के सीने पर लगे घाव के चिह्न को प्रतिष्ठा का चिह्न माना जाता था। इससे

यह सिद्ध होता था कि उसने लड़ाई के मैदान में शत्रु का मुकाबला आमने-सामने किया था, न कि पीठ दिखाकर मैदान छोड़कर भाग गया था। जब वह आगे आया तो नेपोलियन ने उसके सीने पर युद्ध के दौरान लगे घाव के निशान को देखा। कुछ शब्दों में अपना विचार रखते हुए सैनिक ने कहा, युद्ध में लड़कर हम मरने को तैयार हैं, किन्तु भूख और ठंड से मरने से क्या लाभ होगा। नेपोलियन ने एक चक्कर लगाकर सैनिकों की ओर मुखाग्र होकर कहा, 'मेरे बच्चे! तुम्हारे सीने पर जो सम्मान के निशान हैं, क्या उससे तुम्हें शर्म आती है? तुम उसे छिपाना चाहते हो?' नेपोलियन ने जैसे ही शर्म शब्द कहा तो सिपाही का उत्साह जाग उठा। यों तो अच्छे आदमी भी कभी-कभी भ्रमित हो जाते हैं वैसे ही वे लोग हो गए थे। लेकिन उनमें उत्साह था तभी तो सेना में भर्ती हुए थे और लड़ाई में आए थे। उसी उत्साह के कारण सिपाही ने कहा, 'नहीं'। उसी के साथ सबने कहा कि 'नहीं श्रीमान। हमें कपड़े नहीं चाहिए, 'यदि प्रमुख या मार्ग-दर्शक में उत्साह है तो उसके साथी भी उत्साही हो जाते हैं। प्रमुख की स्पष्ट छाप उसके साथियों पर पड़ती है। आप सब प्रमुख कार्यकर्ता हैं। शेष सदस्यों की मानसिकता कैसी रहेगी, यह आप पर अवलम्बित है। इस दृष्टि से जो नए कार्यकर्ता यहाँ आए हैं उनसे मैं इतनी प्रार्थना करूँगा कि जो यहां हमारे पुरान पुरुष बैठे हैं। जिनको मैंने कहा कि किसी के बाल पक गए हैं और किसी के बाल झड़ गए हैं, जरा उनके सम्पर्क में आइये। भारतीय मजदूर संघ समझ लीजिए। इसकी कार्य-पद्धति और रीति-नीति समझ लीजिये। कल सायंकाल जैसा मैंने कहा था, भारतीय मजदूर संघ एक मात्र ऐसा संगठन है, जो पूर्णतया पागल लोगों का संगठन है। आपको अपने मन में पागल बनने की तैयारी कर लेना चाहिए। आप अपने को भारतीय मजदूर संघ की जीती जागती प्रतिकृति मानें। आपको भारतीय मजदूर संघमय बनना है।

मैंने प्रगतिशीलता के जीवाणु का उल्लेख किया है जिसका अर्थ है व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा। प्रगतिशील लोगों को गरीबों का क्या होगा ? देश का क्या होगा ? यह सब बातें बहुत छोटी लगती हैं। इसलिए ऐसी छोटी बातों की उन्हें फिकर भी नहीं होती है। यह सारा जीवाणु बाहर रखकर भारतीय मजदूर संघ का जो आदर्शवाद का वायु मण्डल रूपी थियेटर है, इसमें आप आइए। आत्मचिन्तन की दृष्टि से कार्यकर्ताओं के लिये यह आश्यक है। इस अधिवेशन में जनता के सामने जो रखना था, वह हो गया है। अब समस्याओं पर विचार अगले सत्र में होने वाला है। किन्तु कार्यकर्ताओं के लिए हम समय-समय पर यह Stock taking करते रहते हैं कि जिस दिशा में हम जा रहे हैं, जो विचार लेकर हम चल रहे हैं, उन विचारों का प्रभाव क्या होता है ? बदलती परिस्थितियों एवं बदलते घटनाचक्र में हमारे विचार ठीक उतरते हैं या नहीं इसका भी सिंहावलोकन हम करते है। ज्यादा समय न लेते हुए मैं थोड़ा सा विचार इस सम्बन्ध में रखूँगा। कोई भी विचार ठीक है या गलत, यह घटनाचक्र की कसौटी पर कितना खरा उतरता है, इस पर निर्भर करता है। हैदराबाद में भी हम लोगों ने इस प्रकार का सिंहावलोकन किया था। प्रसन्नता की बात है कि उस समय का सिंहावलोकन अब तक की परिस्थितियों में खरा उतरा है। इसलिये उसी बात को दोहराना उचित नहीं होगा। जो हैदराबाद में नहीं थे, वह दूसरे से जानकारी कर लें। अब तक की तीन-साढ़े तीन साल की नई परिस्थितियों के बारे में मैं कुछ बातों का उल्लेख करना चाहता हूँ। हैदराबाद में जब हम लोगों ने प्रस्ताव पारित कर कम्प्यूटर विरोधी प्रस्ताव पारित किया था तो हमारे वामपंथी मित्रों ने संदेह प्रकट करते हुए कहा कि 'राजीव गाधी तो देश को २१वीं सदी में ले जाना चाहते हैं और आप इसे १६वीं सदी की ओर पीछे ढकेल रहे हैं'। यह तो दकियानूसी (obscu-

rantism) हैं। लेकिन आज सभी कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं को अपनी पुरानी भूमिका छोड़कर हमारे साथ आना पड़ा है। वैसे कम्प्यूटर का यह जो सुपर ब्रेन का दावा है वह १९ अक्टूबर, १९८७ की एक घटना से खोखला साबित हुआ। आपने अवश्य सुना होगा कि विश्व के शेयर बाजार में एक बड़ा संकट हुआ। शेयर मूल्यों में भारी गिरावट आई। एकाएक यह कैसे हो गया ? उन्होंने इसको जानने के लिए कम्प्यूटर से कंसल्ट (Consult) किया। किन्तु कम्प्यूटर के पास मानव मस्तिष्क नहीं होता है। कम्प्यूटर तो उसी ढंग से उत्तर देता है जैसा उसे फीड (Feed) किया गया होगा। यह कहना कि कम्प्यूटर किसी भी परिस्थिति में सही उत्तर हमें देगा ही, यह बात उतनी ही बेतुकी है, जितना कि यह कहना कि फाउन्टेनपेन ने कविता लिखी है। निस्संदेह कविता कलम की सहायता से लिखी गई। किन्तु जिसने कविता लिखी वह फाउण्टेनपेन से अलग एक व्यक्ति था। इसी प्रकार क्रिकेट का बाल यह दावा नहीं कर सकता है कि उसने विकेट गिराये। बॉल तो एक साधन था। विकेट का पतन बॉलर द्वारा बॉल फेंकने से हुआ। ठीक यही दशा कम्प्यूटर की है। जब १९ अक्टूबर, १९८७ की सुबह को शेयर के दाम गिरे और कम्प्यूटर को वह जानकारी फीड की गई तो कम्प्यूटर ने निर्देशित किया कि शेयर बेच दिये जायें। क्योंकि मूल्यों के गिरने पर इसी तरह के निर्देश देने को उसे तैयार किया था। इसके फलस्वरूप चारों ओर जो प्रतिक्रिया हुयी उससे विश्व में बड़ा आर्थिक संकट निर्माण हुआ। जो आपने समाचार पत्र में अवश्य पढ़ा होगा। इस बात के लिए सबसे बड़ा अपयश (discredit) अंश कम्प्यूटर के हिस्से में था। मैंने यह बात उन लोगों के लाभ के लिए कहा है, जो कम्प्यूटर के बारे में अंध-विश्वास करते हैं।

हमारा साम्यवादियों से अनेक मतभेद है। एक तो यह कि वे

रूस के अंधसमर्थक हैं । अगर मास्को में वर्षा होती है तो वे अपना छाता बंगलौर में खोल देते हैं । कारण कि रेडियो ने बताया कि इस समय मास्को में वर्षा हो रही है । मास्को ने जो रास्ता बताया है या अपनाया है वह भी अभी तक फलदायी नहीं हो सका है । वे तो उसका अभी तक परीक्षण ही कर रहे हैं किन्तु भारत के साम्यवादी उसके अंधानुकरण के लिए झपट पड़े हैं । आपने सुना होगा कि कुछ परिवर्तन या सुधार (Reforms) पहले चाइना में, उसके बाद रूस में तथा वियतनाम में किए जा रहे हैं । अब यह जो सुधार या परिवर्तन आ रहे हैं । उनका सबका वर्णन करना तो ठीक नहीं होगा । आर्थिक दृष्टि से यदि विचार करें तो भारतीय कम्युनिस्टों की मक्का यानी मास्को में वहां जो अभी सुधार आ रहे हैं वह मुख्य रूप से मार्केट् इकोनामी है । दशकों से साम्यवादी देशों में यह चर्चा चल रही है कि यह कितना उचित होगा कि प्राइस फारमेशन का नियंत्रण वैज्ञानिक समाजवाद के आधार पर स्टेट द्वारा हो । १९५५ में साम्यवादी विचारधारा के विचारक प्रोफेसर ब्रुस ने इस विषय में कहा था कि मार्केट इकोनामी को स्वतन्त्र रूप से कार्य करने देना चाहिए । दस साल बाद १९६५ में दूसरे साम्यवादी विचारक मिस्टर लाइवर मैन, तीन वर्ष बाद १९६८ में चेकोस्लोवाकिया के साम्यवादी विचारक मिस्टर बोतासिक ने भी इसी विचार का समर्थन किया । फ्रांस के मिस्टर रोजर ने भी इसी प्रकार के विचार रखे । इन सबको रिफारमिस्ट कहा गया और दण्डित किया गया तथा इनकी पदावनति की गई । इन सब साम्यवादी विचारकों का यही मत था कि वैज्ञानिक समाजवाद का नाम आप भले ही लेते रहें किंतु If market factors are not allowed to operate freely तो देश प्रगति नहीं कर सकता है । आपको आश्चर्य होगा कि अभी विगत फरवरी १९८६ में जो रूस की कम्युनिस्ट पार्टी की

२७ वीं कांग्रेस सम्पन्न हुई है उसमें (Market Economy) को स्वीकार किया है। जिसके लिए मिस्टर लाइबर, मिस्टर गिरीडी और मिस्टर बोतामिक को दण्डित किया गया था। इसे क्या कहा जाय ? एक परिवर्तन या सुधार, या रूस की वैचारिक दृष्टि से गिरावट, आखिर क्या कहा जाय ? यह तो रूस के लोग ही बता सकते हैं। हम यहाँ पर इस बात की चर्चा करना आवश्यक नहीं समझते थे। किंतु हमें अपने कुछ सिद्धान्त रखने हैं इसलिए चर्चा आवश्यक हो गई।

साम्यवादियों ने कहा कि दुनिया दो खेमों में बटी है। इनमें एक है हैव (शोषक) और दूसरा हैव नाट्स (शोषित)। उन्होंने कहा कि यह वर्ग संघर्ष इस दुनिया के प्रारम्भ से है और तब तक चलता रहेगा जब तक यह दुनिया समाप्त नहीं हो जाती है या यह वर्ग अपने आप नहीं समाप्त हो जाते तब तक वर्ग संघर्ष चलता रहेगा। किन्तु भारतीय मजदूर संघ पहला सङ्गठन है जिसने कहा कि वर्ग की कल्पना अपने आप में एक भुलावा (myth) है इण्टक (INTUC) यद्यपि वर्ग संघर्ष के सिद्धान्त को नहीं मानती है किन्तु बर्ग हैं इसलिए उनमें समन्वय होना चाहिए। हमने कहा कि यदि वर्ग है तो उसमें समन्वय क्यों होना चाहिए। मैंने कहा कि मजदूर और मालिकों के हित (Interest) अलग-अलग हैं। यहां तक कि कार्लमार्क्स का तकनीकी संघर्ष की दुनियां दो खेमों (Campus) में बँटी है, हैब्स और हैब्स नाट्स। यह गलत है। अनेक interst के ग्रुप हैं। जैसे, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक आदि। ग्रुप इंटरेस्ट की परिभाषा में यह एक दूसरे से संघर्ष कर सकते हैं। जहाँ शोषण है वहां शोषण के विरुद्ध संघर्ष अवश्य करना चाहिए किन्तु इसे वर्गों का संघर्ष कहना गलत है। सारी दुनियां दो कैम्प में बंटी है, यह भी कहना गलत है। इस बात के लिए भारतीय कम्युनिस्ट हमें

दकियानूस (obscurantists) कहते हैं। उन्होंने कहा कि आप तो भारत के विचारों और उसकी परम्पराओं का समर्थन कर रहे हैं। वे ऐसा क्यों कहते हैं ? वे हमें ऐसा हमारे विश्वकर्मा जी के कारण कहते हैं। इसलिए कि मैंने कहा कि भारत में विश्वकर्मा सेक्टर सबसे बड़ा सेक्टर है। दूसरे शब्दों में सेल्फ इम्प्लायड लोग। वे न तो किसी के मालिक हैं और न किसी के मजदूर। नाई को देखो, बढ़ई और लुहार को गांवों में देखो। वह न तो किसी का शोषण करते हैं और न ही किसी को अपना शोषण करने देते हैं। तो आप अपने वर्ग-संघर्ष के सिद्धान्त में इनको कहाँ रखोगे। वे इसका कोई ठोस उत्तर तो नहीं देते हैं किन्तु यह कहते हैं कि यह तो गलत है। क्यों गलत है ? यह बतलाने में अपने को असमर्थ पाते हैं। वे मुझसे कहते हैं कि आप का विश्वकर्मा सेक्टर अन्त तक चलने वाला नहीं है। अन्ततोगत्वा पूरा विश्व दो खेमों में बँटने के लिए बाध्य है। ऐसा क्यों है ? वह इसलिए कि कार्लमार्क्स ने कहा है। चीन में राजनीतिक नेता और वे नेता जो सरकार में हैं ऐसा कहते हैं कि यद्यपि हम कार्लमार्क्स और लेनिन का बड़ा आदर करते किन्तु जो कुछ मार्क्स ने आज से एक सौ वर्ष पूर्व कहा है वह आज लागू नहीं हो सकता है। वह तो आउट डेट हो गए हैं। इसलिए हमें अपने ढङ्ग से सोचना चाहिए। जब हमने कहा कि यह है जो चीन के साम्यवादी नेता कह रहे हैं तो भारत के साम्यवादियों ने कहा कि सेल्फ इम्प्लाइड मार्क्स के सिद्धान्त में फिट नहीं बैठता है। किन्तु यह बात रूस के ध्यान में अब आई है कि तानाशाही का मुख्य सिद्धान्त---प्रत्येक वस्तु राज्य के लिए, प्रत्येक वस्तु राज्य के अन्तर्गत और राज्य से बाहर कुछ नहीं, यदि इसे आर्थिक सिद्धान्तों के लिए लागू किया तो साम्यवादी शासन रहते हुए भी आर्थिक प्रगति नहीं हो सकेगी। जहाँ कहीं भी रूस ने आधुनिक तकनीकी लागू किया है बेकारी बढ़ी है। कर्मचारियों की

नौकरी चली गई। ऐसे लोगों का क्या किया जाय जो बेकार हो गए हैं। इन्हें बहुत दिनों तक भरमाये नहीं रखा जा सकता है। तब इनके मन में सेल्फ इम्प्लायड सेक्टर का विचार आया। इसलिए उन्होंने कानून बनाया, जिसका नाम रखा "The Law of Individual Enterprises of Russia" जिसे हम भारत में सेल्फ इम्प्लायड व्यक्तियों का विश्वकर्मा सेक्टर कहते हैं। यद्यपि भारत के साम्यवादियों की निगाह में सेल्फ इम्प्लायड व्यक्तियों के कारण हम दकियानूस (obscurantists) हैं। किन्तु उन्हीं के मक्का मास्को में सेल्फ इम्प्लायड व्यक्तियों के लिए कानून बन गया है। अब वे क्या हैं ? इसका उत्तर वे नहीं देते हैं। रूस सरकार ने ऐसे गृह उद्योगों को सहयोग दिया है। रूस ने कहा कि ऐसे इन्टर प्राइजेज हाउस होल्ड इन्टर प्राइजेज के रूप में रह सकते हैं, किन्तु उसने एक शर्त लगा दी है कि ऐसे गृह उद्योग एक भी व्यक्ति नियोजित नहीं कर सकते हैं। यहाँ तक कि मार्क्स ने स्वयं कहा था कि हैंडीक्रैफ्ट उद्योग में दो व्यक्ति नियोजित किए जा सकते हैं, जिसे कर्मचारियों का शोषण नहीं कहा जाएगा। रूस के (Individual Enteprises) के अन्तर्गत नियम यह है कि हाउस होल्ड इन्टर प्राइजेज केवल परिवार के लोगों द्वारा ही चलाया जायेगा। अब तो इस पद्धति को चीन ने भी अपना लिया है। हंगरी ने भी स्वीकार किया है। अन्य साम्यवादी देश इसे लागू करने के इच्छुक हैं। कुछ ने उदार दृष्टिकोण अपना कर दो व्यक्ति को, चीन ने आठ व्यक्तियों को तथा हंगरी ने दस व्यक्तियों को काम दिए जाने की अनुमति दी है। फिर भी वे सब हाउस होल्ड इन्टर प्राइजेज कहलाते हैं। चीन ने तो साफ कहा है इसे शोषण नहीं कहा जाएगा। अब हाउस होल्ड इन्टर प्राइजेज या प्राइवेट इन्टर प्राइजेज, जिसमें इन सेक्टरों को लगाने की अनुमति दी गई है, वे तीन सेक्टरों में हैं। एक तो खाने के सामान पैदा करने में जैसे ब्रेड और अन्य चीजें, जो गेहूँ से

बनाई जा सकती हैं। दूसरे, सर्विस उद्योग हैं, जैसे हेयर ड्रेसिंग और सिलाई आदि। तीसरा एन्सीलियरी उद्योग, जिसमें मशीनों के छोटे-छोटे पार्टस बनाए जाते हैं। यह पार्टस बड़े उद्योगों में सप्लाई होते हैं। विश्वकर्मा सेक्टर के लिए हमें भारतीय साम्यवादियों द्वारा दकियानूस (Obscurantists) कहा जाना, यह उनकी अज्ञानता का परिचायक है। अब तो यह विश्वकर्मा सेक्टर उनके मक्का अर्थात रूस ने भी अपना लिया है। मुझे जेसस क्रिस्ट के वह शब्द याद आ जाते हैं कि 'भगवान्! उन्हें क्षमा कर दो, इसलिए कि वे नहीं जानते हैं कि वे क्या कहते हैं।' यही दशा बहुत से साम्यवादियों की है। जो विचार १६५५ में हम लोगों ने दिया वह वैचारिक कसौटी पर खरा उतरा है मजबूर होकर उस विचार को अब साम्यवादियों को भी स्वीकार करना पड़ा है। भारत सरकार ने १६८६ में सेल्फ इम्प्लायड लोगों का पहला सम्मेलन दिल्ली में बुलाया। उन्होंने सोचा था कि यह कार्य राजनीतिक नेता कर लेंगे। ग्रीक पुराण में एक कहावत है कि राजा मिदास को भगवान ने वरदान दिया था कि वह जिस वस्तु को छू देगा वह सोने की हो जायेगी। ठीक उसी प्रकार हमारी सरकार को यह वरदान मिला है कि यदि यह सोने को भी छू देगी तो वह धूल अर्थात मिट्टी हो जायेगी। इसलिए यह सरकार सेल्फ इम्प्लायड के बारे में कुछ करने वाली है, ऐसी आशा नहीं की जा सकती है। फिर भी शुरूआत की गई है। इससे भी हम यह अर्थ निकाल सकते हैं कि जो विचार १६५५ में भारतीय मजदूर संघ द्वारा प्रतिपादित किए गए थे, कितने सही हैं।

हमारा दूसरा सिद्धान्त जिसके लिए साम्वादियों ने कहा कि यह अव्यावहारिक है वह है 'श्रमिकीकरण'। हमने जो तीन सिद्धान्त कहा है वह सभी जानते हैं। वह है श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण, राष्ट्र का औद्योगीकरण तथा उद्योगों का श्रमिकीकरण। विगत भारतीय

श्रम सम्मेलन में जब भारतीय मजदूर संघ के प्रतिनिधि मनहर भाई मेहता ने श्रमिकीकरण पर बोलना प्रारम्भ किया तो उस सम्मेलन में उपस्थित एक साम्यवादी नेता ने पीछे से कहा, 'लगता है कि भारतीय मजदूर संघ का श्रमिकीकरण कम्युनिस्टों को ले डूबेगा।" जब युगोस्लाविया ने 'श्रमिकीकरण' को लागू किया तो रूस ने श्रमिकीकरण के विरोध में साहित्य प्रकाशित किए तथा 'श्रमिकीकरण' को समाजवाद विरोधी बताया। वैज्ञानिक समाजवाद के अनुसार प्रत्येक वस्तु पर अधिकार राज्य का होना चाहिए। किन्तु घटनाओं के दबाव और भाग्यचक्र के बदलाव ने यह परिवर्तन लाया है कि रूस कहता तो है कि सभी चीजें राज्याधीन होनी चाहिए और वे अपनी हार स्वीकार नहीं करते हैं किंतु वे अनुभव कर रहें हैं कि स्टेट ओन्ड फार्म्स और इंडस्ट्री चल नहीं सकते हैं। हम आपको स्मरण दिलाना चाहते हैं कि भारतीय मजदूर संघ ने नवम्बर, १९६९ को भारत के राष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि को एक माँगपत्र दिया था। यह मांगपत्र हमारें मा० अध्यक्ष दादा बी० के० मुखर्जी के नेतृत्व में दिया गया था। जिसमें इन्डस्ट्रियल ओनरशिप का पैटर्न निश्चित करने के लिए एक राष्ट्रीय आयोग गठित करने की मांग की गई थी। उसमें कहा गया था कि To determine taking simultaneously into the consideration the special characteristics of each industry, the total requirements of the national economy, the pattern of different industries such as regulated, private enterprises, cooperativisation, municipalisation, joint industries, self employment, democratisation and nationalisation.

जो मांग पत्र दिया गया है उससे यह बात स्पष्ट होती है कि तरह-तरह के industrial ownership हो सकते हैं। केवल Nationalisation या Privatisation कहना गलत है।

जिस उद्योग के लिए जो उपयुक्त हो, उस प्रणाली को अपनाया जाय। वैज्ञानिक समाजवाद के अन्तर्गत देश के लोग केवल देश की सम्पत्ति के मालिक ही नहीं, बल्कि उस आय के स्वामी हैं जो उस सम्पत्ति से प्राप्त होती है। अब रूस के लोग सोच रहे हैं कि पुराने सिद्धान्तों के साथ नये श्रमिकीकरण के सिद्धान्त का तालमेल कैसे बैठाया जाय। वैज्ञानिक समाजवाद के अन्दर सेल्फ इम्प्लायड और इंडिविजुएल इन्टर प्राइजेज को कैसे शामिल किया जाय। अब उनके सामने समस्या यह है कि यदि ऐसा किया गया तो बड़े उद्योग छोटे उद्योगों को निगल जाएंगे। जब आपस में औद्योगिक प्रतिद्वंदिता चलेगी तो हाउस होल्ड इण्डस्ट्री को बड़े उद्योगों से कैसे बचाया जाएगा। दूसरी बात श्रमिकीकरण के सम्बन्ध में, जो साम्यवादियों को अधिक कष्ट दे रही है, वह है पूरे देश की सम्पत्ति पूरे देश के लोगों की होगी। श्रमिकीकरण के अन्तर्गत छोटे उद्योग चलेंगे और बड़े उद्योग भी इसमें सम्पूर्ण अधिकार मजदूरों को होगा। कर्मचारी अपने में से ही चुनाव करके Board of Management बनाएगा। Chairman का चुनाव करेगा। बाजार से खरीद से लेकर Marketing and Export Policy तय करने का अधिकार मजदूरों द्वारा बनाये गए बोर्ड और उसके चेयरमैन को होगा। केवल टैक्स लगाने सम्बन्धी अधिकार सरकार के हाथ में होगा। उन्होंने नये कानून के अन्तर्गत यह भी कहा कि उद्योग Autonomous होंगे। स्वायत्त शासी होंगे। साथ ही उस उद्योग की जो आय होगी, उसके बारे में सम्पूर्ण अधिकार मजदूर द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों का होगा। क्या करना? क्या न करना? यह भी अधिकार उन्हीं को होगा। सरकार कोई हस्तक्षेप नहीं करेगी। और अगर वे ऐसा करेंगे तो उनके मूल सिद्धांत को बहुत बड़ी ठेस अर्थात धक्का लगेगा। इसलिए रूस के विचारक काफी परेशान हैं क्योंकि रूस या अन्य पश्चिमी देशों में वे एक भिन्न

संस्कृति रखते हैं। वे सभी भौतिकवादी और व्यक्तिवादी हैं। इसलिए वे भौतिकवादी दृष्टिकोण के अलावा और कुछ सोच भी नहीं सकते हैं। अब तो चीन ने भी यह स्वीकार कर लिया है कि भौतिक-वादी दृष्टिकोण के कारण प्रत्येक चीनीवासी बहुत अधिक मात्रा में आत्म केन्द्रित हो गया है। जब एक चीनीवासी अपने पड़ोसी की फिकर नहीं कर सकता है तो समाज या देश से वह कैसे सम्बन्ध बना सकता है। वह तो समाज और देश के बारे में सोच ही नही सकता है। इसलिए वर्ष १६७८ में चीन की सरकार ने कहा कि हम भौतिकवादी प्रगति तो चाहते हैं किन्तु अब भौतिकवादी दर्शन को छोड़कर समाज-वादी आध्यात्मिक सभ्यता को अपना रहे हैं। चीन ने सही अर्थो में आध्यात्मिक सभ्यता को अपनाया है। जिसके कारण भारत के साम्य-वादी कुछ लज्जा का अनुभव कर रहे हैं और आध्यात्मिक सभ्यता को अपने मुख से कहने में वैसे ही संकोच कर रहे हैं जैसे एक नवविवाहिता कुलीन वधू अपने पति का नाम लेने में संकोच करती है। किन्तु जहाँ साम्यवादियों का शासन है उन्होंने कहा कि वे आध्यात्मिक सभ्यता का प्रारम्भ कर रहे हैं।

पश्चिम में भौतिकवादी आधार के कारण रूस के सामने एक दूसरी समस्या है। सभी कर्मचारी स्वार्थी हो गए हैं। इसलिए किसी विषय पर चुने गए प्रतिनिधि क्या निष्पक्ष निर्णय ले सकेंगे, यह प्रश्नवाचक चिह्न उनके सामने है। अगर नई तकनीकी लाई गई तो छटनी होना अपरिहार्य हो जायेगा तो कर्मचारियों द्वारा चुने गए प्रतिनिधि, जिनका प्रतिनिध होना कर्मचारियों पर निर्भर है, क्या वे छटनी का निर्णय मजदूरों के ऊपर थोप सकेंगे ? दूसरे, आय वितरण के समय क्या उसी उद्योग के भिन्न वर्ग के मजदूर क्रान्ति नहीं करेंगे ? इन दो बातों के लिए रूस के विचारक श्रमिकीकरण के विषय पर परेशान हैं। हम बड़ी ही विनम्रता के साथ कहते हैं कि भारतीय

मजदूर संघ ने कोई नयी बात नहीं दी है। भारतीय संस्कृति और परम्परा के अन्तर्गत जो विचार आए हैं उसे आज की परिस्थितियों में कैसे लागू किया जाय, इस पर हमने विचार किया है। चूँकि हम भारतीय संस्कृति के समर्थक हैं इसलिए विशुद्धभौतिकवाद पर आधारित व्यक्तिवाद को हम छोड़ देते हैं। इसलिए हमने कहा कि हम मजदूरों को स्वार्थी नहीं बनने देंगे। आज श्री प्रभाकर जी ने भी अपनी रिपोर्ट में कहा कि हम स्वार्थ का लालच देकर मजदूरों को आकृष्ट नहीं करना चाहते हैं। आदर्शवाद देना चाहते हैं। इसलिए हमारी जो त्रि-सूत्री है, उसमें पहला Nationalise the labour मजदूरों को राष्ट्र-भक्त बनाओ। हर एक मजदूर यह अवश्य sसोचे कि देश समृद्धशाली बने। इसके बाद हमने कहा कि (Labourise the Industry) उद्योगों का श्रमिकीकरण हो और फिर कहा कि (Industrilise the nation) अर्थात राष्ट्र का औद्योगीकरण। इसलिए Labourisation की प्रथम शर्त है Nationalise the labour. मुख्य अवधारणा यह है कि मजदूर पश्चिमी के भौतिकवादी संस्कृति से मुक्त हो और वह राष्ट्र की एकता एवं समृद्धि के लिए प्रतिबद्ध हो। अब तो रूस ने भी परिस्थितियों के दबाव में आकर विश्वकर्मा सेक्टर को स्वीकार किया है और अन्य साम्यवादी देशों ने उसका अनुसरण किया है। किन्तु उन्हें भय है कि बड़े उद्योग छोटे उद्योगों को निगल जाएंगे, यह हमारे देश में नहीं होगा। कारण कि हमारे देश का कर्मचारी देशभक्त हैं, वे एक दूसरे के पूरक हैं।

हमारे देश में जब योजना आयोग की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई और गाडगिल आयोग की स्थापना Cottage and village industry, Khadi and gramodyog industry के लिए की गई जैसा कि रूस में है तो उस समय एक बहुत बड़ी चर्चा हुई। पं० दीनदयाल उपाध्याय ने, जो भारतीय संस्कृति में पले पुषे थे ने कहा कि हम अपने देश में सभी प्रकार के सेक्टर को बढ़ने देंगे, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, किन्तु वे एक दूसरे को न खायें, इसलिए एक विभाजन रेखा

खींचनी होगी। अर्थात व्यवस्था के लिए रेखा खींचिए। टैक्सटाइल इण्डस्ट्री है। जो माल हैण्डलूम पर बनता है और कहीं पैदा नहीं किया जायेगा। बड़ी मिलों में जो माल उत्पादित होगा वह और कहीं उत्पादित नहीं किया जायेगा। मध्यम उद्योग में जो माल तैयार होगा वह और कहीं तैयार नहीं होगा। टैक्सटाइल में जितने सेक्टर्स हैं, सभी का demarcation किया जाय। कोई गड़बड़ नहीं करेगा, एक दूसरे को संभाल लेंगे। रूस में भी जो हाउस होल्ड इन्टर प्राइजेज सेक्टर प्रारम्भ हुआ उसके लिए कानून बन चुका है। यदि वे इसे ठीक ढंग से चलाना चाहते हैं तो यह तब तक संभव नही होगा जब तक वे मजदूरों को राष्ट्रभक्त नही बनाते हैं। बिना राष्ट्रभक्ति के यह संभव नहीं है। चीन ने स्वीकार किया है कि वहां के लोग आत्मकेन्द्रित हो गए हैं। चीन की तरह जब तक रूस में भी आत्मकेन्द्रित लोग रहेंगे तब तक उन्हें कोई रास्ता नहीं मिलेगा। जहाँ प्रत्येक मजदूर राष्ट्रभक्त है वहाँ प्रत्येक मजदूर सम्पूर्ण राष्ट्र का विचार करके काम करते हैं। वे एक दूसरे के सहयोगी के रूप में काम करते हैं। जब तक रूस Nationalise the Labour की शर्त स्वीकार नहीं करता है तब तक वह भौतिकवादी दर्शन के कष्ट से मुक्ति नहीं पा सकता है। भारतीय संस्कृति के जीवन-मूल्य में समुत्कर्ष निःश्रेयस्य कहा गया है। Material progress is a Spiritual Heritage अर्थात Material और Spiritual एक ही सिक्के के दो चेहरे हैं। जब तक भारतीय संस्कृति के ऐसे मूल्य रूस में नहीं आते हैं तब तक वे कुछ भी प्रयोग करें, सफल नहीं हो सकते हैं। श्रमिकीकरण का सिद्धान्त भारतीय संस्कृति से निकला है। भारतीय मजदूर संघ जो कुछ कर रहा है उसमें कोई कमी आने वाली नहीं है। वह इसलिए नही कि हम बड़े बुद्धिमान हैं। बल्कि इसलिए कि हमारे काम का आधार भारतीय संस्कृति है। यह विश्वकर्मा का सिद्धान्त भी भारतीय संस्कृति से लाया

गया है। हम लोग केवल हेड लोडर के नाते दुनिया का माल रख रहे हैं। किन्तु यह कितना शास्त्रसिद्ध है, वह परिस्थितियों के आधार पर सिद्ध हो रहा है। आगे भी हमें जो प्रगति करनी है भारतीय मजदूर संघ कोई भी अपना सुझाव एकदम नहीं देता है। कोई भी सत्कार्य जल्दी न करना हमारा यह निश्चय है। जो (Romantic) लोग हैं, नया विचार आते ही उसे तुरन्त प्रकट करते हैं। इन्दौर वर्ग में मैंने बताया था कि कई बातें मन में आते हुए भी उनको उच्चारण करने में कहीं सात साल, कहीं दस साल और कही ग्यारह साल लगे Labourisation शब्द के Conceive करने का काम, deliver करने का काम, इसमें सात साल लगे। हम कोई भी काम जल्दबाजी में नहीं करना चाहते हैं क्योंकि Romantic नहीं है। Realistic अर्थात् Practical हैं। किन्तु हमारा काम है आगे बढ़ना। एक सुझाव देकर मैं यह अपना भाषण पूरा करूँगा। Terminology का बहुत बड़ा महत्व है जैसे Collectivc Bargaining को ही लें। अर्थात् सामूहिक सौदेबाजी पर ही विचार करें तो इसका अर्थ है कि उद्योग, उद्योग का चलना, उद्योग से होने वाला उत्पादन और मुनाफा आदि का मामला उद्योगपति और कर्मचारी के बीच का है। इन सारी बातों पर केवल मालिक और मजदूर ही आपस में बातचीत करते हैं। और यही दो औद्योगिक सम्बन्ध के प्रमुख अंग हैं। ऐसा आधुनिक Collective bargaining का अर्थ है। किन्तु हमारे यहाँ प्राचीन काल से यह माना गया है कि औद्योगिक सम्बन्ध में एक तीसरी अति आवश्यक पार्टी है, वह है समाज या राष्ट्र। इसलिए मालिक और मजदूर जब सामूहिक सौदेबाजी करते हैं तो यह बात उनके ध्यान में रहे कि औद्योगिक सम्बन्ध के लिए एक तीसरा पक्ष भी है वह है समाज या राष्ट्र। इसलिए दोनों को सम्पूर्ण राष्ट्र का ध्यान रखकर समझौता करना चाहिए। यह नहीं चलेगा कि मालिक और मजदूर, दोनों बैठकर

समझौता करें और राष्ट्र की चिन्ता छोड़ दें। राष्ट्रीय दृष्टिकोण सबके सामने रहे यह मेरा कहना है। जो बात आज हम आपके सामने रख रहे हैं उसका धीरे-धीरे प्रचार करें। मालिक और मजदूर दोनों ही राष्ट्र के लिए जिम्मेदार हैं। इसलिए उनके बीच जो समझौता होता है तो उसमें सम्पूर्ण राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता का भाव होना चाहिए ताकि यह बात स्वाभाविक रूप से लोगों के मन में आ सके। धीरे-धीरे अपनी बात में, व्यवहार में यह नया शब्द हम लावें, वह शब्द National Commitment है। इसलिये The term collective bargaining should be replaced by the term national commitment. मालिक और मजदूरों के बीच जो समझौता हुआ है वह Joint commmitment of the employer and employee to the nation as a whole है।

अपने को जल्दी नहीं है। हम ही ऐसे हैं जिनको बिल्कुल जल्दी नहीं है, शेष सभी जल्दी में हैं। हम सब जानते हैं कि Haste causes delay जल्दबाजी विलम्ब का कारण बन सकती है। अच्छे काम में जल्दबाजी की आवश्यकता नहीं है। इस 'राष्ट्रीय प्रतिबद्धता' के माध्यम से हम भारतीय मजदूर संघ को एक कदम आगे ले जा सकते हैं। मनोवैज्ञानिक ढंग से आगे ले जाने का काम हम प्रारम्भ करें।

विजय

सक्रिय जीवन में संकट आते हैं। कठिनाइयां आती हैं। किन्तु सभी कठिनाइयां एक ही तरह की, एक ही वेराइटी की, एक ही श्रेणी की नहीं होती हैं। तरह-तरह की श्रेणियां संकटों की, कठिनाइयों की हैं। कुछ प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण कठिनाइयां आती हैं, कुछ अनुकूल या सहायक परिस्थितियों के कारण आती हैं। यह देखने में जरा परस्पर विरोधी (Paradoxical) लगेगा, ऐसा नहीं है। अनुकूल परिस्थितियों के कारण भी कठिनाइयां बढ़ सकती हैं। परिवार है। बच्चा पैदा हुआ। अब बच्चा पैदा होना, यह बात जितनी श्रीमान परिवार मेंसुखदायक है उतनी ही गरीब परिवार में भी सुखदायक है। तो यह एक शुभ घटना है। अब वह बच्चा बढ़ने लगा, वैसे तो खुशी के कारण बच्चा पैदा होने से पहले ही कुछ उसके गरम कपड़े, कुछ कपास के कपड़े, थोड़े बहुत कपड़े तैयार करके रखते हैं। बच्चा पैदा होता है तो थोड़े से कपड़े पहना देते हैं तो बड़ा आनन्द होता है। अब उसका शरीर बढ़ने लगता है तो पहले जो कपड़े तैयार किए थे, छोटे मालूम होते हैं, तो नये कपड़े सिलाने पड़ते हैं। खर्चे का मामला आ जाता है। गरीबी में आटा गीला। फिर एक साल बाद उसके कपड़े सिलवाने होते हैं। अब खर्चा तो है उसके कारण कष्ट होते हैं किन्तु क्या यह कहा जाएगा कि कपड़े का खर्च बहुत आता है, काहे को बच्चा पैदा किया जाय? बच्चे का शरीर बढ़ता है। खर्चे बढ़ते हैं। तो भी मां-बाप बहुत खुश रहते हैं। हमारा बच्चा बढ़ रहा है इसको आर्थिक परिभाषा में Developmental difficulties कहते हैं। इसकी एक विशेषता यह रहती है कि अनुकूल परिस्थिति के कारण ही यह कठिनाइयां पैदा होती हैं।

क्योंकि व्यक्ति के जीवन में रहे, संस्था के जीवन में रहे या समाज के जीवन में रहे, परिस्थितियाँ कभी-कभी परस्पर विरोधी आवश्यकताएं निर्माण करती हैं। परस्पर विरोधी, दोनों बातें सही हैं। मैं गरीब आदमी हूँ चाहता हूँ कि भैंस खरीद लूं, उसका दूध निकालूं और उसको बेचता जाऊं। मेरा परिवार कम है उसका पालन-पोषण कर सकता हूँ। अब जो धंधा मेरे पिताजी करते थे, मैं भी करना चाहता हूँ। इसमें कोई नाजायज बात नहीं है। लेकिन मैं गरीब भी हूँ तो मैं चाहता हूँ। कि जो भैंस खरीदूं वह कम पैसे में मिले। इसमें नाजायज कुछ नहीं है। लेकिन फिर यह सोचता हूँ कि एक बार खरीदने के बाद परिवार का पेट पालने के लिए पर्याप्त पैसा मिले इसलिए वह ज्यादा दूध देने वाली भी होनी चाहिए। अब यह भी अपेक्षा नाजायज नहीं है। लेकिन मैं गरीब हूँ उसको यदि ज्यादा चारा देना पड़ा और बहुत अधिक चारा खाने वाली भैंस रही तो मुनाफा क्या रहेगा? तो सोचता हूँ कि कम चारा खाने वाली भैंस मिले। तो कम पैसे में भैंस खरीदी जाय, वह चारा भी कम खाय, दूध भी ज्यादा दे, यह सारी अपेक्षाएं जायज हैं। इसमें नाजायज कुछ नहीं है। यह परस्पर विरोधी आवश्यकताएं हैं। नाजायज आवश्यकताएं नहीं हैं। परस्पर विरोधी आवश्यकताएं हैं। व्यक्ति के जीवन में, संस्था के जीवन में, राष्ट्र के जीवन में ऐसी विरोधी आवश्यकताएं अनुकूल परिस्थितियों के कारण भी निर्माण होती हैं। अब हम यह समझ लें जो कार्यकर्ता के नाते बहुत आवश्यक है। छोटी-बड़ी बातों में परिस्थितियों की आवश्यकताओं के परस्पर विरोध के कारण या परस्पर विसंगति के कारण, दोनों Considerations legitimate जायज होते हुए भी इनमें विरोध दिखता है। अब यह बात थोड़ा समझ लें। यद्यपि यह मामूली बातें हैं। हम लोग तीन दिन से यहाँ बैठ रहे हैं, सम्मेलन वगैरह कैसा रहा, यह हम

जानते हैं। उस पर अधिक भाष्य करने की आवश्यकता नहीं है। कुल मिलाकर सब संतुष्ट हैं। हम यह भी जानते हैं। लेकिन कई लोगों के मन में यह बात है जो नितांत सत्य भी है। मैं भी पूर्ण रूप से सहमत हूँ कि एक अखिल भारतीय मजदूर संगठन, जिसके कितने ही Industrial Fedeations हैं, यूनियन्स हैं, अनेक उद्योगों में काम चल रहा है, अनेक राज्यों में काम चल रहा है और राष्ट्रवादी होने के कारण अपने-अपने उद्योगों के बारे में सम्पूर्ण औद्योगिक क्षेत्र के बारे में, सम्पूर्ण राष्ट्र के बारे में, अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के बारे में सोचने की जिम्मेदारी हमारे प्रतिनिधियों पर है। तो देहात में रहने वाला unto the last आखिरी आदमी, जो बेरोजगार है, खेतिहर मजदूर है, उसकी समस्या से लेकर रीगन गोरवाच्य की जो आपसी समझौता वार्ता हो रही है, उसका क्या होगा ? यह सब हमारे jurisdiction में है। माने गरीब भूखा रहने वाला खेतिहर मजदूर वहाँ से लेकर मिस्टर गोर्वाच्योव और मिस्टर रीगन सभी हमारे jurisdiction में आते हैं। इन सबके बारे में तीन दिन में चर्चा करना, विचार-विमर्श करना सम्भव है क्या ? Perticipation आवश्यक है। अब जितने लोगों को बोलने का अवसर घन्टे में मिल सकता है। उसकी भी एक सीमा है। घन्टा भी ६० मिनट का होता है। २४ घंटे का एक दिन होता है। अब इस हालत में ७२ घंटे हैं। हम यह भी चाहेंगे कि नींद के लिए थोड़ा समय मिले। बोलने के लिए थोड़ा समय मिले। ऐसा नहीं कि केवल नींद के लिए समय मिले, सुनने के लिए समय मिले, बोलने के लिए नहीं। भोजन के लिए भी समय मिले, लेकिन साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि इतने महत्वपूर्ण निर्णय जहां लिए जाते हैं वहां अधिक से अधिक लोगों को बोलने का अवसर प्राप्त हो, यह भी एक स्वस्थ परम्परा है। क्योंकि जिनको बोलने का मौका मिलता है वही केवल वैचारिक

पुरुष है, ऐसा नहीं हैं । हमारे भारतीय मजदूर संघ में हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि हमारा छोटे से छोटा कार्यकर्ता भी इतना विचारवान है कि उसके विचार बाहर के बड़े नेताओं के सुनने लायक होते हैं । ऐसा भी यदि हमने सोचा कि यहाँ बैठे हुए लोगों में जो ऐसे विचारी पुरुष हैं, विचारक हैं, जिनके विचार सुनने लायक हैं उनको ही बोलने दिया जाय, ऐसा भी कहा तो मेरा ख्याल है कि ऐसे लोगों की संख्या सैकड़ों में आ जाती है । लेकिन घंटे ७२ हैं और Participation भी आवश्यक है । यह कार्यक्रम भी तीन दिन में समाप्त करना आवश्यक है । उसमें नींद भी आती हैं, कहीं जाना भी आता है, भोजन भी आता है । सभी बातें आवश्यक हैं। संख्या दिनों की बढ़ाई जा सकती है क्या ? लोगों ने सुझाव दिया, तीन दिन का पांच दिन होना चाहिए । बिलकुल जायज बात है । लेकिन फिर आने वाले हमारे प्रतिनिधियों को भी सोचना पड़ता है कि छुट्टी मिल सकती है क्या ? इतने दिन हम यहाँ रह सकें, ऐसी व्यवस्था हो सकती है क्या ? तो वह नहीं हो सकती, यह भी बात यहाँ जायज है । माने अधिक दिन बाहर रहना, यह कठिन है। यह भी जायज Consideration है । ज्यादा समय, ज्यादा दिन हम यहां नहीं रह सकते तो Participat on समाधान कारक नहीं हो सकता है, यह भी बात सही है । अब दिखने से परस्पर विरोधी है। किन्तु दोनों Considerations बिल्कुल ठीक हैं । यह जो कठिनाई है इसी कठिनाई को developmental difficulties कहते हैं । इसके कारण एकदम निराश होने की भी आवश्यकता नहीं है किन्तु साथ ही साथ इसमें से कैसे रास्ते निकालना इस पर भी विचार करना पड़ेगा । और इस दृष्टि से कार्यकर्ताओं की समझदारी बढ़ना बहुत आवश्यक है। अर्थात् खुद की समझदारी बढ़ाना, यह बात बहुत आवश्यक हो जाती है । कभी-कभी ऐसा भी हो जाता है कि एक भी

Considertion ऐसा हुआ तो सब ऐसा क्यों नहीं हुआ। भगवान ने इस सृष्टि की रचना ऐसी की है कि आप कोई निर्णय लीलिए उसमें से कुछ न कुछ दुष्परिणाम तो निकल आते हैं, स्वाभाविक भी है। भगवान ने कहा, 'सर्वारम्भाहि दोषेण धूमेनाग्नि रिवा बृत्तः।" आप कुछ भी निर्णय लीजिए उसमें ज्यादा अच्छे परिणाम निकलेंगे तो भी कुछ न कुछ दुष्परिणाम निकल सकते हैं और उन्होंने उदाहरण दिया कि जैसे अग्नि जब हम प्रज्वलित करते हैं। तो कुछ न कुछ धुंआ निकलता ही है। ऐसा निर्णय लेना कि जिसका कोई disadvantage नहीं होगा यह भगवान के लिए भी सम्भव नहीं। नहीं तो यह न कहते कि धूमेनाग्नि रिवा वृतान्तो हमारे लिए सम्भव होगा, यह कहना ठीक नहीं है। लेकिन अपनी समझदारी यदि हम बराबर बढ़ाते हैं तो फिर संस्था को चलाना, संगठन को बढ़ाना, लोकसंग्रह करना, यह सभी बातें सम्भव हो सकती हैं। एक यशस्विता के लिए कई बातें चाहिए हम सब जानते हैं। भारतीय मजदूर संघ के अनेक अभ्यास वर्ग हुए हैं। वहां यशस्वी बनने के लिए, यशस्वी कार्यकर्ता बनने के लिए कौन-सी गुण सम्पदा आवश्यक है इसकी चर्चा हुई है। कौन से कौन गुण चाहिए, उसकी एक सूची भी बनाई गई है। सब कुछ है किन्तु प्रारम्भ कहां से होता है? एक अच्छी घटना याद आती है पश्चिमी में सबसे बुद्धिमान राजा जिसका नाम सोलोमन था, जो केवल चौदह-पन्द्रह साल का था, उसके पिताजी बीमार हो गए। इसके कारण पिता के राजकाज में सहायता करने का उसको मौका मिला। लेकिन पिताजी की तबीयत एकदम गिरने लगी और वह १५-१६ साल का नहीं हुआ तो दिखता था कि अब उसी को राज्य संभालना पड़ेगा क्योकि पिताजी अब जाने वाले हैं। जब उनके जीवन के अन्तिम क्षण आ गए और उन्होंने कहा, 'बेटा! आओ, अब मैं तुमको सब समझाता हूँ'। तो इसके मन

में बहुत विचलितता आई। छोटा लड़का था। वह पिताजी के पास जाने से पूर्व अपने कमरे में गया, दोनों घुटने टेक दिये, जैसी यहूदियों की, इसाइयों की पद्धति है और भगवान से एक मिनट की प्रार्थना की, एक ही वरदान माँगा। अब किस मनः स्थिति में उसने प्रार्थना की, यह पहले समझ लेना चाहिए। एक बड़ा राज्य उसे संभालना था। राज्य संकट से ग्रस्त था। तरह-तरह के संकट और वैभव सामने थे। स्वयं राजा बनना, यह एक अवसर था, किन्तु सारे संकटों का मुकाबला भी करना था। भगवान से कुछ मांगना था इसलिए घुटने टेक दिए। उसने भगवान से वरदान मांगा, 'Lord give me an understanding heart' मुझे समझदार हृदय दीजिए, बस इतना ही मांगा। यह नहीं कि मुझे वह राज्य दीजिए, मांगा भी तो केवल समझदार हृदय, उसको पश्चिम का wisest king ऐसा सब लोग मानते हैं। मैं समझता हूँ कि हम सब कार्यकर्ताओं के लिए भी यह मार्गदर्शक प्रार्थना है। 'Lord give me an understanding heart.' हमारा हृदय समझदार रहे, यह बहुत बड़ी आश्यकता है। मैंने कहा कि हमारे अभ्यास वर्गों में यशस्वी कार्यकर्ता होने के लिए कौन-कौन से गुण चाहिए, सबको दुहराने की यहाँ आवश्यकता नहीं है। लेकिन प्रारंभिक बिन्दु यदि कोई होगा तो वह होगा समझदार हृदय। इसलिए छोटी-छोटी व्यावहारिक बातों में भी अपना स्तर बढ़ाना चाहिए। एक उदाहरण सामने आता है। नयी दिल्ली में साउथ एवेन्यू में हम एक स्थान पर रहते हैं। एक दिन सुबह पाँच बजे ही किसी ने घंटी बजायी। वह हमारे एक कार्यकर्ता थे। हमने दरवाजा खोला और उनसे सामान रखने को कहा। बाद में देखेंगे, सुबह पाँच बजे का समय है, जरा चाय लेकर फिर बाहर जायेंगे। हमारे यहाँ रामधन नाम का रायबरेली का एक लड़का है, जो हमारा All purpose Secretary है। इसका

अर्थ हुआ कि मकान साफ करने से लेकर तो रसोई बनाना सब काम वह करता है। मैंने कहा, भाई 'रामधन, जरा चाय बनाओ। अब हमारे यहाँ रचना ऐसी है कि आखिरी कुर्सी में बैठकर वहाँ से रसोई घर दिखाई देता है। मैं ऐसे स्थान पर बैठा था जहाँ से रसोई घर नहीं दिखाई देता था। एक पाँच मिनट बाद मेरे मित्र कहते हैं, ठेंगड़ी जी। आपका रामधन तो बहुत अच्छा लड़का था। मैं तो कई बार आया हूँ, बड़ा disciplined था obedient था । लेकिन लगता है कि इसको दिल्ली की हवा लग गई है । हमने कहा, भाई ! क्या हुआ ? वे बोले, नहीं ! नहीं ! ऐसा नहीं है; मुझे चाय की इतनी जल्दी नहीं। मैं कोई चाय का आदी नहीं हूँ। लेकिन आपने उसको चाय बनाने को कहा और वह अपने ही ढंग से दूसरा काम कर रहा है। तो मेरे ध्यान में बात आई। मैंने कहा, "आप ऐसा कीजिए, थोड़ा अन्दर जाकर देखिये"। अब हमारा घर तो एक ब्रह्मचारी का आश्रम है, उसमें बरतन भी कितने रहेंगे और किसी को जाने के प्रतिबन्ध करने का कोई कारण नहीं। वहां जो बरतन है, उसमें दूध का बरतन होगा, उसमें दूध है क्या ? जरा देखिए तो। इसका कारण एक ही है कि अभी सवा पाँच बजे हैं। रामधन ने रात में दूध रखा नहीं होगा। सुबह कोई अतिथि आएगा, इसका पता नहीं। अब वह जो Milk का बूथ है वह खुलता है साढ़े छह बजे। वह साढ़े छह बजे जाकर दूध लाता है तब चाय बनाता है। तो मुझे पता था, इसलिए मैंने कहा कि अन्दर जाकर देखिये, दूध है क्या ? वह अन्दर गए, दूध नहीं था। बोले कि दूध नहीं है। तो वह चाय काहे से बनाएगा। वे संस्था के श्रेष्ठ कार्यकर्ता हैं । किन्तु हमारे रामधन की क्या कठिनाई होगी, इसको वह समझ नहीं सके। बात छोटी है। हम लोग बहुत बार ऐसा समझते हैं कि हमारा सिद्धान्त है। अच्छा है। हम लोगों को समझाएंगे। लोग समझ

जाएंगे। शब्दों से किसी को समझाया जा सकता है इस बात से मेरा दिन-प्रति-दिन विश्वास कम होता जा रहा है। शब्दों का शब्द-कोष में क्या अर्थ है, मैं यह जानता हूँ। आप भी जानते हैं। किन्तु मैं जो बोलता हूँ और आप जो समझते हैं दोनों एक ही रहेंगे, ऐसा नहीं है। क्योंकि आप भी शब्दकोष पढ़े हैं और मैं भी पढ़ा हूँ। यह गारन्टी नहीं दी जा सकती है कि एक वाक्य मैं जो चार लोगों के सामने कहता हूं। सभी उसको एक ही तरह से ग्रहण करेंगे। जैसा जिसका mental background होगा उसके अनुसार वह किसी बात को ग्रहण करता है। बात एक ही है किन्तु उसको उसके जो मीठे खट्टे अनुभव आए होंगे। उसके ज्ञान का स्तर, उसका स्वभाव Temperament जैसा होगा उसके अनुसार ही वह ग्रहण करता है। बहुत बार हम समझते हैं कि हमने तो उसे बताया था। जो बताया था वैसा ही उसने समझ लिया क्या ? या उसने अपने ढंग से लिया। मैंने इन्दौर के वर्ग में एक घटना बतायी थी। हमारे एक रिश्तेदार तीन भाई थे। बड़े भाई पन्द्रह साल बड़े थे। इसलिए उन्होंने निश्चित किया था कि अपने छोटे भाइयों को बड़ा बनाऊंगा। लेकिन गरीबी के कारण वह मैट्रिक पास नहीं हो सके। किसी वकील के पास क्लर्क का काम करते थे। मैं तो जीवन भर क्लर्क रहूंगा, लेकिन दोनों भाइयों को पढ़ाकर बड़ा बनाऊंगा ऐसा ही उन्होंने निश्चय किया था। दूसरे भाई केशव कालेज में आए। पैसा तो बड़े भाई भेजते थे। कालेज का वातावरण थोड़ा रोमांटिक था। इनका mind भी Romantic बन गया। तो स्वाभाविक रूप से मन में विवाह के बारे में, पत्नी के बारे में कुछ अपेक्षाएं जैसे Romantic आदमी की होती हैं, वह थी। अब उनका विवाह हुआ। पत्नी जैसे सर्व साधारण परिवार में होनी चाहिए वैसी थी, किन्तु जहां बाकी परिवार वाले समझते थे कि अच्छी लड़की परिवार में आई

है, दिखने में भी अच्छी है। यह जरा extra romantic होने के कारण शायद मन में असन्तुष्ट हो सकते हैं। लेकिन सर्वसाधारण के मन में ऐसा कोई भाव नहीं था। सात–आठ साल बाद तीसरे भाई की शादी का अवसर आया। उनका नाम था माधव। अब माधवराव की शादी हो गई। वहाँ पिताजी के साथ मैं भी गया था। विदर्भ में भोजन के बाद पान वगैरह एक थाली में लाते हैं तो वह भी आया। पाँच-छह लोग पानदान के पास पान खा रहे थे। दूसरे नम्बर के भाई केशवराव भी थे। जिनकी शादी पहले हो चुकी थी। सबसे बड़े भाई नारायण राव भी थे। अब ऐसे अवसर पर शादी से सम्बन्धित बातें चलती हैं। इसमें यह तो नहीं चलेगा कि International politics क्या है ? केवल शादी से सम्बन्धित बातें चलती हैं। किसी ने कहा कि नारायणराव आपका तो कमाल है भाई। नारायण राव बोले, क्या हुआ ? आपने अपने माधव के लिए लड़की नक्षत्र जैसी सोचकर लाई है। इतना सुनते ही केशवराव बोल पड़े, मेरी पत्नी कुरूप है क्या ? हम सब देखते रहे। माधव की शादी है। स्वाभाविक रूप से कहा गया, माधव के लिए, किन्तु यह नम्बर दो के भाई बोल रहे हैं यानी मेरी पत्नी कुरूप है क्या ? अब ऐसा क्यों हुआ ? इनके मन में यह भाव था कि इनकी पत्नी कुरूप है ? उसने देखा भी नहीं था केशव की पत्नी को, किन्तु जो mental background आदमी का होता है, जो अनुभव होते हैं। मन में, जो भावनाएँ होती हैं, इन सबका परिणाम दूसरे की बताई हुई बात में अपने ऊपर होता है। इसके कारण कई लोगों का जो ख्याल है कि हम जो बताते हैं वही लोग समझते हैं, बिल्कुल गलत है। उसका जो mental background होगा, उसका जो हृदय का स्तर होगा, उसका जो आध्यात्मिक स्तर होगा, उसका जो शिक्षा का स्तर होगा, सभी बातों को लेकर वह ग्रहण करता है। इसलिए व्यवहार में जब

हम एक दूसरे को समझाने को प्रयास करते हैं तो दूसरी बात आवश्यक होती है। हम उसको क्या समझाना चाहते हैं राष्ट्र, परिवार औद्योगिक परिवार, गरीबों की किस्मत कैसी हो, भारतीय मजदूर संघ के सिद्धान्त, यह हम उसको समझाना चाहते हैं। मेरी आप सब कार्यकर्ताओं से प्रार्थना है कि यह सारी अच्छी-अच्छी बातें किसी को समझाने से पहले और अपना मुख खोलने के पहले हम पहले उसको स्वयं समझने की कोशिश करें, यह बहुत आवश्यक होता है। और उसके मन की रचना क्या है? यदि हम समझ सकेंगे तब तो dealing बराबर हो सकती है। क्योंकि जैसे मैंने कहा कि पूर्ण रूप जायज होते हुए भी परस्पर विरोधी considerations व्यवहार में आते हैं। जिसके साथ हम बात कर रहे हैं यदि उसका मन हम ठीक ढंग से नहीं समझते हैं तो हम भले ही बड़े बुद्धिमान हों, हमारे लिए बात करना संभव नहीं। व्यवहार में ऐसी कितनी बातें आती हैं। अभी आप देखिये, हमारे एक कार्यकर्ता थे, उन्होंने यूनियन का काम शुरू किया तो यूनियन के काम में कोई Interest नही लेता था। कारण कि वे चतुर लोग थे, बुद्धिमान लोग थे, इसलिए कोई यूनियन के काम में Interest नहीं लेता था। किन्तु ऐसे ही एक पागल आदमी ने थोड़ा-सा यूनियन का काम शुरू किया तो हमारे उस शहर के कार्यकर्ता को लगा कि इसको प्रोत्साहन देना चाहिए। मैं एक बार बैठक में गया था। वह कार्यकर्ता थोड़ा विलम्ब से आए तो जैसे ही उन्होंने उसे आते देखा जोर से कहा कि "आओ, चांदनी चौक के बादशाह" हमने कहा, "क्या बात है? आपने ऐसा क्यों कहा"? उसने कहा कि यहाँ तो यूनियन के काम में कोई रुचि लेता नहीं है इसलिए इनको जरा incentive देना चाहिए। मेंने कहा कि incentive देना चाहिए, मैं यह समझता हूँ। कार्यकर्ता की यदि आप पीठ नही थपथपाएंगे तो कार्यकर्ता बैठ जाएगा, ऐसा

हो सकता है। लेकिन पीठ ही थपथपाते जायेंगे तो क्या होगा ? इसका भी विचार किया है क्या ? प्रशंसा से कार्यकर्ता प्रोत्साहित होता है। उसे incentive मिलता है। वह ज्यादा काम करता है। यह बात सही है। लेकिन सीमित मात्रा में सही है। जैसा कई लोगों को प्रातर्विधि ठीक होने के लिए कुछ Purgative लेने की आवश्यकता होती है। पहले तो थोड़ा त्रिफलाचूर्ण की मात्रा शुरू कर देते हैं। बाद में कोठे को भी उस मात्रा की आदत हो जाती है तो इससे काम नहीं बनता तो मात्रा और बढ़ानी पड़ती है। प्रशंसा के लिए भी यही बात है। उसको प्रोत्साहन देने के लिए आज आपने उसे चांदनी चौक का बादशाह कहा, बड़ा प्रसन्न हुआ। अब यह सुनते-सुनते आठ-दस महीने बाद वह सोचेगा, यह कुछ नहीं है। इतने त्रिफलाचूर्ण से मामला साफ होने वाला नहीं है और कुछ चूर्ण बढ़ाना चाहिए। आप क्या कहेंगे ? दिल्ली का बादशाह। प्रशंसा की मात्रा कितनी बढ़ायेंगे। दूसरी बात यह है कि एक आदमी को आपने प्रशंसा देकर इतना बढ़ाया कि वहां बाकी आदमी को आगे बढ़ने का incentive रहेगा क्या ? अहंकार के कारण और लोगों को वह काम से दूर कर सकता है। इसका अहंकार नहीं बढ़ेगा क्या ?

यानी काम के लिए प्रोत्साहन, काम के लिए घातक परिणाम भी हो सकते हैं कि नहीं या Incentive भी है, Ego भी है। दोनों Possibilities हैं और यह पता नहीं इसमें से क्या होगा ? तो उन्होंने कहा, हाँ, यह तो हो सकता है। थोड़ी देर बाद उसने कहा कि क्या हमें पीठ नहीं थपथपाना चाहिए। उसको प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए। जो अच्छा काम है उस े यदि अच्छे काम के लिए Recognition नहीं देंगे तो उसको प्रोत्साहन नहीं मिलेगा। यह बात ठीक है किन्तु उसकी मनःस्थिति को समझ लेना चाहिए। आपका प्रोत्साहन उसकी एक प्रक्रिया है। उसके कारण कभी incentive का काम होता है कभी

Ego का काम होता है । वह प्रोत्साहन भी देता है, अहंकार भी बढ़ाता है । मन:स्थिति क्या है ? सबकी पीठ थपथपाई । दूसरी बार कहा, क्यों तुमको यह समझता नहीं है । ऐसी गलती तुम्हारे हाथ से क्यों हो गई ? तो वह नाराज हो जाता है । हम काम करते हैं, हमको ही डांट-फटकार होती हैं । कोई इनके नौकर हैं, वह यह भी कहेगा । बाद में अच्छा काम हुआ तो उसकी पीठ थपथपाई । ऐसा मामला बीच में जमाना पड़ेगा । ऐसा जनरल फारमूला कि पीठ थपथपाते जाओ तो कल अच्छा होगा यह नहीं चलेगा । यह सब बातें प्रत्यक्ष काम में इतनी बार आती हैं कि जिसके साथ हम बात कर रहे हैं उसको ठीक से न समझते हुए हमने यदि बात की तो कितने दुष्परिणाम होंगे, यह कहना कठिन है । इस दृष्टि से छोटा रहे या बड़ा रहे, प्रत्येक समय हम अपनी समझदारी बढ़ाने का प्रयास करें, यह बहुत आवश्यक है । अपना ही understanding का स्तर बढ़ाना हमारे लिये आवश्यक है । बाकी सब बातें हो जायेंगी । गुण सम्पदा भी बढ़ सकती है । परिस्थितियों का मुकाबला भी हम कर सकते हैं । संकटों का मुकाबला भी हम कर सकते है । दुश्मनों का मुकाबला करना कठिन नहीं है । खुद का मुकाबला करना सबसे कठिन कहा गया है । 'आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मन:' हमारे सबसे अच्छे मित्र कौन हैं, हम हैं । हमारे सबसे कट्टर दुश्मन कौन है, हम ही हैं । हम अपने दुश्मन का भी काम करते हैं और हम अपने मित्र का भी काम करते हैं । तो क्या करना ? हम अपनी समझदारी का स्तर बढ़ाएं यह आवश्यक है । यह केवल भारतीय मजदूर संघ पर ही लागू नहीं है । पारिवारिक जीवन में भी लागू होता है । हमारी समझदारी का स्तर जितना बढ़ेगा । मजबूत होगा । इस दृष्टि से जहां हम बड़ी-बड़ी समस्या का विचार कर रहे हैं वहां हमारे सम्मुख बहुत सी समस्याएं हैं । उसका विस्तार से वर्णन करना मैं यहाँ आवश्यक नहीं समझता । बाहर की परिस्थिति की दृष्टि से हम

सब समझदार हैं। अपने मन के अन्दर हम कितनी समझदारी रखते हैं इस पर शक हो सकता है। बाहर के Challanges क्या हैं यह हम जानते हैं। वि...कर भारतीय मजदूर संघ के मंच पर कितनी बार यह बात कही गई है कि सबसे बडा Challange हमारे सामने है फारेन कैपिटल, मोनोपलीज, जिससे हमारा मतलब है मल्टी-नैशनल, इण्टर-नैशनल, मोन्नटरी फण्ड, वर्ल्ड बैंक, उनके एजेंन्ट्स, उनके स्टूजेज, इण्डियन मोनोपली कैपिटलिस्ट, बड़े इण्डस्ट्रियल हाउसेज, टाटा, बिड़ला, गोयनका, डालमिया और भारत सरकार, इनका यह जो षड्यंत्र है, तुम्हारे पैसे से हम सरकार बनायेंगे, हमारे सरकार के भरोसे तुम्हारा पैसा बढ़ायेंगे You scratch my back I scratch your back. तुम मेरी पीठ खुजलाओ और मैं तुम्हारी पीठ खुजलाता हूँ। यह जो सरकार सरमाएदारों का षड्यंत्र है, इसका मुकाबला करने के लिए भारतीय मजदूर संघ ने कहा कि बहुत बड़ी ताकत की आवश्यकता है। यह बहुत बड़ी ताकत संगठन के द्वारा आ सकती है। जितने भी शोषित हैं, कच्चे माल के लिए जिनका शोषण होता है वे किसान, सस्ते उत्पादन के लिए जिनका शोषण होता है वे मजदूर और अच्छी कीमत के लिए जिनका शोषण होता है वह उपभोक्ता अपनी-अपनी स्थिति को समझकर अपना-अपना संगठन मजबूत बनाएं और यह तीनों एक मंच पर आकर इनका मुकाबला करने की कोशिश करें। चूँकि फारेन कैपिटल हिन्दुस्थान में आर्थिक साम्राज्य के पाकेट बना रहा है। राष्ट्रीय स्वाभिमान रखने वाले सभी देशभक्तों को इसमें शामिल होना चाहिए। यह सारी बातें dictatorship की तरफ जाने वाली हैं। इसके कारण लोकतंत्र के सभी समर्थकों को इसमें शामिल होना चाहिए। यह सारी बातें लोगों तक ले जाना, उनको जागृत करना, प्रशिक्षित एवं संगठित करना, तभी हम षड्यंत्र को विफल कर सकते हैं। क्योंकि उनके पास पैसा और सत्ता, दोनों है। हमारे पास

न पैसा है, और न सत्ता है। हमारी संख्या और संख्या का संगठन, शोषित संख्या और शोषितों का संगठन यही हमारा एक मात्र सम्बल है। इसके कारण संगठन और संगठन की ताकत बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके लिए कुछ बातें आवश्यक है, हम मजदूरों की समस्यायें समझ लें। ट्रेड यूनियन चलाने के लिये जो आवश्यक गुण हैं, निगोसिएशन करना चाहिए, कंसीलिएशन ठीक से हो सके, गेट मीटिंग में भाषण दे सकें, चार्जसीट का जवाब दे सकें, कानून की जानकारी ठीक ढंग से रहे, तरह-तरह की सारी बातें हम जानते हैं, लेकिन यह सभी बातें तब होंगी जब हमारे साथ मजदूर होंगे। हमारे पास आदमी होंगे। तभी तो बाकी सब कुछ होगा। मुझे याद है पहले शाखा चलाते समय हमारे एक मित्र को कमाण्डर बनाया गया था। बीस-पच्चीस लोग उपस्थित रहते थे। नयी शाखा थी। अब कमाण्डर बन गए तो उन्होंने डांट-फटकार शुरू कर दी। उन दिनों जर्मनी का उदाहृण उन लोगों के सामने था। मार्शल गोरिंग आदि का नाम बहुत चलता था। अब एक बार इसने किसी को डांट दिया तो मैंने कहा कि क्यों भाई, तुम इतनी डांट-फटकार क्यों करते हो ? उन्होंने कहा कि तो काम कैसे चलेगा ? क्या आप चाहते हैं कि शाखा पर discipline नहीं होनी चाहिए।' मैंने कहा कि discipline होनी चाहिए, लेकिन discipline जिन्हें सिखाना है वह पहले संघस्थान पर आ जायें, यह आवश्यक है। संघस्थान तो खाली है, आप जोरदार discipline सिखा रहे हैं, यह कैसे चलेगा ? हमने कहा कि आपके व्यवहार में समन्वय होना चाहिए। भारतीय संस्कृति की जो अपनी विशेषता है Liberty without licensiousness स्वतंत्रता चाहिए लेकिन स्वेच्छाचार तक नहीं। Discipline without regimentation पहले लोकसंग्रह, फिर लोक शिक्षा प्रारंभ करो। आपने लोक शिक्षा प्रारंभ की, जहाँ एक भी व्यक्ति नही है। तो आप किसको शिक्षा देने वाले हैं। इस

तरह से संगठन की ताकत यह सब हम कहते हैं तो हमारी सारी गुण सम्पदा का उपयोग है। उसकी आवश्यकता है। जब लोग हमारे साथ रहेंगे, ज्यादा से ज्यादा हमारा लोक-संग्रह होगा। यदि ज्यादा से ज्यादा लोकसंग्रह करना है तो पहले हमें हमारी खुद की समझदारी बढ़ाना बहुत आवश्यक है। यह कहने से नहीं चलेगा कि मैं समझ गया हूँ। मैं जो कहता हूँ वही सच है। कौन कहता है कि मेरा कहना गलत है, ऐसा कहने से काम नहीं चलेगा। अपने साथ जो लोग हैं उनको शिक्षित करना है इतनी बात नहीं है। जो बाहर uncommitted मजदूर हैं उनको भी अपने साथ लाना है। Uncommitted वे हैं जो इधर भी नहीं हैं, उधर भी नहीं हैं। किसी यूनियन से उन्हें लेना-देना नहीं है। उनको भी अपने साथ लाना है। इतना ही नही, हम यह समझ लें कि हमें कट्टर से कट्टर कम्युनिस्ट को भी BMS minded बनाना है। यह हमारी जिम्मेदारी है। हमारा काम का यह तरीका नहीं है कि वह तो कम्युनिस्ट है। इसलिए हम उसे खत्म करेंगे बल्कि उसे हजम करेंगे। हमारे एक मित्र वच्छराज जी व्यास, जो थोड़ा सिनेमा के शौकीन थे, कहते थे कि पूरे समाज के साथ हमारा आक्रमक प्रेम Aggressive love होना चाहिए। जब मैंने उनसे पूछा कि यह Aggressive love की परिभाषा आप की क्या है? तो वे बोले, 'तुम मानो न मानो, हम हैं तुम पर फिदा।' सबसे प्रेममय हृदय होना चाहिए, लेकिन मातृ हृदय का यह मतलब नहीं है कि लाड़-प्यार से बच्चे को बिगाड़ना। बच्चा अगर ठीक ढंग से बात न मानता हो तो उसको चपत भी लगानी पड़ती है, मारना भी पड़ता है, पीटना भी पड़ता है। कभी-कभी उसको कहना पड़ता है कि आज तुमको रोटी नहीं खिलाई जायेगी। भूखा रखा जायेगा। तो यह मारने-पीटने का काम भी मां के कर्तव्य में से एक है। किन्तु मातृ हृदय के साथ पिटाई। प्रेम यह pre-condition है। मातृ हृदय pre-condition

है। सभी को एक साथ लाना और यदि सभी को एक साथ लाना है तो एक तरह का ट्रीटमेंट सबके साथ करते हुए हम ला सकते हैं क्या ? ठीक है जहाँ पिटाई की आवश्यकता है, हम ऐसा कहें कि मातृहृदय के साथ हमने चपत लगाई है। लेकिन कौन क्या है ? उसका स्वभाव क्या है ? आप क्या समझते हैं कि सब कम्युनिस्ट एक तरह के हैं क्या ? हमें ज्यादा से ज्यादा लोगों को अपने साथ लाना है। अपनी वाणी पर, सुनने पर नियंत्रण रहे, अपने भावाभिव्यक्ति पर नियंत्रण रहे और इतना ही नहीं, जो बिल्कुल हमारा कट्टरविरोधी है उसके साथ भी हम सभ्यता से बात करें। केवल विवाद करना, Argument करना, यही जो राजनीतिक ढंग है इससे काम होने वाला नहीं है। बहुत बार तो यह होता है कि वाद विवाद के कारण आदमी हाथ से निकल जाता है You win an argument and lose a man. Argument में तो जीत हो गई, लेकिन आदमी हाथ से निकल गया। सर्वसाधारण नियम ऐसा है कि कट्टर विरोध है या हो सकता है। अब लाना है तो उसका रास्ता क्या है, बातचीत का लोहा होता है। लोहे को कहीं भी dissolve करना मामूली बात नहीं है। वह Nitric acid में dissolve होता है अब यह किसी को पता चला कि लोहा nitric acid में dissolve होता है। तो उसने laboratoy में जाकर बड़े ही dilute acid में लोहे की पट्टी को रखा। प्रोफेसर ने पूछा, क्या है ? उसने कहा कि Nitric acid है। यह तो बड़ा dilute दिखता है। बोले कि dilute में इसे रखा जाता है। थोड़ी देर बाद वह लोहा dissolve हो गया। विद्यार्थी को लगा कि लोहा dissolve होने में बहुत समय लगा था। जब dilute acid में लोहा रखने से इतना समय लगता है तो Concen trate Nitric acid यदि मैं लेता हूँ तो जल्दी dissolve हो जायेगा। प्रोफेसर के वहाँ से जाने के बाद उसने con centrate Nitric acid डाला। उसमें लोहे

को रखा। परिणाम उल्टा हुआ। Concentrate Nitric Acid की प्रक्रिया यह होती है कि Nitrate बन जाते हैं। वह लोहे के ऊपर इकट्ठा हो जाते हैं। वह स्वयं dissolve नहीं होते। उनका आवरण उनका कवच लोहे की पट्टी होने के कारण अन्दर के लोहे को भी वह dissolve नहीं होने देते हैं। concentrate acid में लोहा dissolve होता ही नहीं है। तो हममें हमारी समझदारी का स्तर बढ़ाना यह सबसे बड़ी बात है।

यदि अपनी समझदारी का स्तर बढ़ता है तो हम अपना संगठन बड़ा कर सकते हैं। और संगठन बड़ा हो जायेगा तब तो हमारे गुणों का उपयोग है। जानकारी का उपयोग है। सबसे प्राथमिक बात संगठन है। और जो महान संघर्ष हमें छेड़ना है, जो एक ऐतिहासिक दायित्व हमारे ऊपर इतिहास ने दिया हुआ है उसका निर्वाह करने के लिए प्रबल संघर्ष की आवश्यकता है। इस संघर्ष के लिए प्रबल संगठन की आवश्यकता है। अब संगठन के लिये समझदारी की आवश्यकता है तो वाहर की परिस्थितियों में हम क्या करते हैं, क्या नहीं करते हैं। परिस्थितियों का उसके ऊपर असर हो सकता है। लेकिन अपनी समझदारी के स्तर बढ़ाने में परिस्थिति बाधा नहीं डालती है। तो पहला प्रयास हमारा Subjective होना चाहिए आन्तरिक होना चाहिए। हम अपनी समझदारी का स्तर बढ़ायें, बहुत बड़ी बात होगी ऐसा मैं समझता हूं। अब समस्यायें हैं कुछ विचार यहां हुआ होगा। शेष का विचार यहाँ नहीं हुआ होगा। हम यहाँ से यदि निश्चित करते हुए जायेंगे कि हम अपना स्तर ऊँचा करेंगे, मैं आपको बताता हूं कि other things take care of themselves बाकी बातें ठीक हो जायेगी। स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था 'Let us put chemicals together in the right proportion. Crystalisation will fallow in the law of nature.' हम chemicals

बराबर मात्रा में इकट्ठा लावें तो crystalisation होकर रहेगा। उसकी अलग चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। हम हमारी समझदारी का स्तर ऊपर करें बाकी सब बातें ठीक हो जायेंगी। हमारे सामने जो संकट है बहुत बड़े हैं। हम साधनविहीन हैं। इस देश के शत्रु साधन सम्पन्न हैं 'रावण रथी विरथ रघुबीरा' इस अवस्था में हम हैं। यह बात सही है किन्तु चिन्ता की आवश्यकता नहीं। इसका एक कारण यह है कि भगवान ने यह assurance दिया है, आश्वासन दिया है कि जहाँ-जहाँ सत्य संकल्प है। सत्य संकल्प का तात्पर्य है दृढ़ विश्वास औरयह दृढ़ विश्वास तभी निर्मल हो सकता है जब व्यक्ति पूर्णरूपेण निर-अहंकार हो। No axe of his own to grind. अपने स्वार्थ की बात मन में न हो। मेरा बड़पन, मेरी सुविधा, यह चीज मन में न हो। जहाँ 'मैं' समाप्त हो जाता है वहाँ केवल वही बच जाता है। और फिर वह ईश्वरीय कार्य है। ईश्वरीय कार्य सफल होता ही है। और कोई कार्य ईश्वरीय बनाना हमारे दिल की बात है। जहाँ हमारे motivation में से संकल्प में से मैं निकल जायेगा। 'मैं' निकल जाने के बाद जो रिक्तता पैदा होती है, वह ईश्वर से भरा जाता है। ईश्वरीय कार्य की विजय अटल है। कोई उस कार्य को मिटा नहीं सकता। यह बात निश्चत है। अपने मन को यदि हम ठीक ढंग से रखते हैं। ध्येयवादी रखते हैं, आदर्शवादी रखते हैं, जैसे परपूज्य श्री गुरुजी ने कहा 'संदेश एक ही सबसे छोटा संदेश मैं नहीं तू ही'। तो जहाँ 'मैं' समाप्त होता हैं वहां उसकी सारी शक्ति का आविष्कार होता हैं। आज ऐसा दिखाई देता है कि संकट बहुत बड़े हैं। आप दुनिया का इतिहास देखेंगे तो आपको लगेगा, ऐसे लोग, जिन्होंने कुछ महान कार्य किये हैं, उन्होंने ऐसी विषम परिस्थितियों में अपना मन विचलित नहीं होने दिया। क्या होगा ? कैसे होगा ? उन्हें ऐसा नहीं लगा। उनके मन में यह निश्चय था कि हम विजयी होकर रहेंगे। क्योंकि

कार्य ईश्वरीय है। दुनिया के इतिहास में, हर देश के, हर पंथ के, हर धर्म के सभी के श्रेष्ठ नेताओं का यदि हम चरित्र पढ़ते हैं तो यह दिखाई देगा कि विषम परिस्थितियों में भी उन्हें यह विश्वास था जिसके कारण वे संकटों पर मात कर सके। मुहम्मद साहब के जीवन का उदाहरण सब जानते हैं। केवल दो आदमी निकले भागते हुए मुहम्मद साहब और अबू बकर। जिनका पीछा कई लोग कर रहे थे। इनके ऊँट बूढ़े थे। उनके ऊँट जवान थे। फासला कम होने लगा। कहीं भी तो छिपना चाहिए, ऐसा उन दोनों ने सोचा एक गुफा में छिप गए। गुफा के मुँह तक दुश्मन आ गए। वे सोच रहे थे कि इसके बाद ऊँट के पैरों का कोई चिह्न नहीं हैं। कहाँ छिप गए वे दोनों। अंदर अबूबकर मुहम्मद साहब से कह रहे थे, साहब बड़ी चिन्ता है। मुहम्मद साहब बोले, कैसी चिन्ता ? उत्तर मिला, बाहर तो बहुत से लोग हैं। यदि उनको पता चला और वे अन्दर आ जाते हैं तो हमारा क्या होगा ? मुहम्मद साहब बोले, क्यों ? क्या फिकर है ?····फिकर यही है कि वे ज्यादा हैं और हम केवल दो लोग हैं। तो मुहम्मद साहब कहते हैं कि अन्धे हो, हम तीन हैं। अबूबकर गुफा में इधर-उधर देखते हैं और कहते हैं कि कहाँ तीन हैं ? हम तो दो ही हैं। मुहम्मद साहब ने पुनः कहा, हम तीन हैं। यह जो तीसरा है, हमारे दुश्मनों से सबसे ज्यादा ताकत रखने वाली हस्ती है, और वह है ईश्वर। ऐसा दृढ़ विश्वास मुहम्मद साहब में था। सूली पर चढ़ने वाले जिसस क्राइस्ट और अमेरिकन इम्पीरियलिज्म के अन्दर आने वाले मिशनरी, यह दोनों समान नहीं हैं। दोनों अलग-अलग

चीजें हैं। ऐसे लोग, जिन्होंने दुनियाँ में बड़े-बड़े काम किए हैं, उनके मन में यह विश्वास था कि यह मेरा नहीं, हम कितनी भी कम संख्या में हों, कोई भी न हो, विजय हमारी ही होगी, ऐसा दृढ़ विश्वास उनके मन में सदैव रहा, इसीलिए वे विजयी हुए। छत्रपति शिवाजी ने जब कार्य प्रारम्भ किया तो उनके पास कुछ नहीं था। मुगल बादशाह, जिनके पास बहुत बड़ा साम्राज्य था, सेनायें थी, कोष था, उनके रहते हिन्दवीं स्वराज्य की माँग कितना कठिन काम था। शिवाजी के पास न एक इंच भूमि थी और न ही कोष तथा सेना किन्तु ग्यारह-बारह साल की उम्र में अपने दस-बारह साथियों के साथ उन्होंने प्रतिज्ञा की कि मैं हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना करके रहूँगा। पाँच पादसाहियाँ दक्षिण की और इतना बड़ा मुगल साम्राज्य किन्तु साधन-विहीन अवस्था में सबके साथ टक्कर लेते हुए उन्होने अपना प्रण पूरा करके दिखाया। हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना हुई। क्यों स्थापना हो सकी, किसी ने जब शिवाजी से कहा, यह तो तुम्हारा राज्य है। शिवाजी बोले नहीं 'हिन्दवी स्वराज्य' यही श्री की इच्छा है। श्री का अर्थ माता भगवती की। एक अन्य पत्र में उन्होंने कहा कि राज्य धर्म का है, शिवबा का नहीं। यह स्वयं को भूलकर, अहम् को भूलकर, जो कुछ भी है, भगवती की इच्छा है। भगवती की शक्ति का आविष्कार होता है। जहाँ-जहाँ अहंकार रहित भगवान के सामने आत्मसर्पण हो जाता है वहाँ कार्य ईश्वरीय हो जाता है। हम यह कह सकते हैं कि भारतीय मजदूर संघ यद्यपि देश के ऐसे विषैले वायुमण्डल में काम कर रहा कि जहाँ प्रधानमंत्री की क्यू में देश के सत्तर करोड़

लोग खड़े हैं। फिर भी ध्येयवाद आदर्शवाद इतनी प्रखर मात्रा में है कि हर एक कार्यकर्ता का बोधवाक्य यही है कि 'मैं नहीं, तू ही' यह ईश्वरीय कार्य है, जो निश्चित रूप से सफल होने वाला है। इसलिए इसकी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

यदि अन्तिम विजय पर हमारा विश्वास पूरा रहा, संकल्प सत्य रहा, साथ-ही-साथ यदि हम अपनी समझदारी का स्तर ऊपर बढ़ाते गए तो बाकी सब चीजों की आप चिन्ता छोड़ दें। Crystalisation will take place itself. सारा crystalisation होने वाला है। यदि हम अपने को ठीक रखें तो भगवान बाकी सब संभाल लेगा।

जैसा कि मैंने पहले ही कहा है कि यहाँ जो कुछ विचार हुआ है वह पूरा-पूरा विचार नहीं हो सका है। इतनी यूनियनें हैं, इतनी इण्डस्ट्रीज है, नैशनल फेडरेशंस हैं, राष्ट्र की राष्ट्रीय स्थिति है सबका विचार पूरी तरह हो ही नहीं सकता है, क्योंकि समय कम है। लेकिन यहाँ से जो प्रमुख बातें हम लेकर जायेंगे, उस पर मनन करेंगे' हम क्या हैं इस पर भी विचार करेंगे, तो सब ठीक हो जायेगा। जीसस ने भी कहा है, Know thyself हम क्या हैं ? हम भारतीय मजदूर संघ हैं अर्थात् यह ईश्वरीय कार्य है और इसका रास्ता यह है कि हमने सब बातें अभ्यास वर्ग में सुन ली हैं, समझ ली हैं। Industrial relation law भी समझना चाहिए। श्रमिकों की Psychology भी समझनी चाहिये, किन्तु सबसे पहले हम अपनी समझदारी का स्तर बढ़ायें सब बातें ठीक हो जायेंगी। इस विश्वास के साथ हम बिल्कुल निरहंकार होकर, आदर्शवादी बनकर, आत्मसमर्पित होकर यदि

भगवान से प्रार्थना करते हैं। प्रार्थना सफल होती है। एक क्रिश्चियन नर्सरी स्कूल में बच्चों को पढ़ाया जाता था। मुझे स्मरण होता है—

When You see the morning light
Say a prayer
When You go to bed at night
Say a prayer
When the tasks that are ahead of You
Seem to be too much for you
Close your eyes and take your cue
Say a prayer.

When the tasks ahead of you यह जो हमारे सामने सब सवाल है। सरकार सरमायेदारों का मुकाबला करना है। बाकी यूनियनों में क्या झंझट चल रही है, राष्ट्रीय अभियान समिति है, शाप लेबल पर बात चलती है, राष्ट्रीय स्तर पर हम एक दूसरे के गले मिलते हैं। बाहरी लोग यह अनुमान नहीं लगा पाते हैं कि भारतीय मजदूर संघ क्या कर रहा है? यह सब झंझटें हैं। लेकिन When the tasks that ahead of you, seem to be too much for you ऐसा लगा कि बहुत है तो close your eyes, say a prayer. सब बातें ठीक हो जायेंगी। तो दृढ़ विश्वास के साथ काम करने पर ही हम यशस्वी हो सकते हैं। आज भले ही कुछ कम और ज्यादा हो जाय up and down चलता है But nobody can steal

a march over us क्योंकि यह लड़ाई सरकार सरमायेदार तथा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पूंजीशाहों से है। इसलिए यहाँ से जाते समय हम भगवान से कहें—

God : we enter our last fight

You knowest that our cause is right

Make us march in thy light

On to victory.

बहुत देर लगने वाली नहीं है। आप आगे बढ़ें चिर विजय की कामना ले।

रूस में भी जो हाउस होल्ड इण्टर प्राइजेज सेक्टर प्रारम्भ हुआ है उसके लिए कानून बन चुका है। यदि वे इसे ठीक ढंग से चलाना चाहते हैं तो यह तब तक सम्भव नहीं होगा जब तक वे अपने मजदूरों को राष्ट्र भक्त नहीं बनाते हैं।

मूल्य—दो रुपया

भारतीय मजदूर संघ, रामनरेश भवन, तिलक गली, पहाड़ गंज
नयी-दिल्ली—११००५५, द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:—

नवज्योति प्रेस, भीकचन्द मार्ग, मथुरा